महानदी

"नराकास" भिलाई - दुर्ग की गृह पत्रिका

2024

हर घर तिरंगा

विशेषांक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

59वीं छमाही बैठक
वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह
23 अगस्त 2024

• संरक्षक •
श्री अनिर्बान दासगुप्ता
निदेशक प्रभारी
सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

• मार्गदर्शक•
श्री पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)
सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र

• प्रबंध संपादक •
श्री सौमिक डे
महाप्रबंधक (संपर्क व प्रशासन, जनसंपर्क
एवं प्रभारी राजभाषा)
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

संपादक मंडल
श्री पंकज त्यागी
महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन/विधि)
फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड
श्री सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक सेल-सेट, भिलाई

श्रीमती अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

श्री पंच राम साहू
वरीय सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, दुर्ग

श्रीमती भावना चाँदवानी
वरिष्ठ मंडल प्रबंधक
यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., भिलाई

श्री जितेंद्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन-राजभाषा)
सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र

संपादन सहयोग
नराकास सचिवालय के कार्मिक

महानदी

राजभाषा गृह पत्रिका - वर्ष 2024
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छ. ग.)

'हर घर तिरंगा' विशेषांक, अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	नाम	पृष्ठ नं
1.	हर घर तिरंगा	केदारनाथ सोनबेर	07
2.	पिता सा शहर-भिलाई	मनोरमा कुमारी	09
3.	लिख लिख कर	कमन नारायण सोनी	09
4.	हर घर तिरंगा	सिंधुजा प्राथुरी	11
5.	तिरंगा	अनिल कुमार अग्रवाल	11
6.	संवाद और संवेदना से सँवरता है व्यक्तित्व	उमा शंकर मिश्रा	13
7.	अलंकृता...वह बेवफ़ा नहीं थी	डॉ. अजय आर्य	16
8.	अबला नहीं नारी हो तुम	शुभ्रा सिन्हा	16
9.	पागल मन	शुभ्रा सिन्हा	16
10.	भारतीय रेल	डॉ. अजय आर्य	17
11.	ज़िन्दगी, भ्रमण,अभिव्यक्ति	किशोर कुमार नङीने	19
12.	हमलोग, राष्ट्रभक्ति	ओमवीर करन	19
13.	एआई में भारतीय भाषाएँ	नितिन वासनिक	21
14.	हिंदी का सम्मान	पुरुषोत्तम साहू	21
15.	अन्वेषक की नौकरी	पी. आर. साहू	22
16.	लघु कथाएँ	रश्मि अमितेष पुरोहित	23
17.	बिन उनवान ज़िन्दगी, ज़िन्दगी, सीता वियोग	नितिन गोस्वामी	25
18.	समय का अभाव	विजय सिंह ठाकुर	26
19.	मेरा संयंत्र-मेरा शहर, छोटी-सी चूक	भागवत राम निषाद	31
20.	एनपीए का बैंक के तुलनपत्र पर प्रभाव	नरेन्द्र पाटिल	32
21.	ख़ामोश लफ़्ज़	डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'	33
22.	सपनों का आकार दें	टकेश्वर कुमार	34
23.	प्रौद्योगिकी की अनुपम गाथा	तनया रमेश गडलिंग	34
24.	हर घर तिरंगा	राजू कुमार शाह	35
25.	पर्यावरण की सुरक्षा में एसआरयू	राहुल दुबे	36
26.	सिंगल यूज़ प्लास्टिक-पर्यावरण का दुश्मन	शुभम किशोर मिश्रा	37
27.	हिंदी भाषा एव साहित्य की विकास यात्रा	सौरभ कुमार राजा	38
28.	मोबाइल और इंसान	के. एन. गिरि	39
29.	मेरा जीवन देश के नाम	मीना नागदेव	40
30.	सफ़र	सुधीर हरणे	42
31.	वो जो छुट्टियाँ थीं	रागिनी गुरव	43
32.	चमत्कार	अनुराधा धनांक	45
33.	पुरानी सोच	अनुराधा धनांक	46
34.	फहरा दो तिरंगा	विजेन्द्र कुमार वर्मा	46
35.	एफसीआई में प्रौद्योगिकी	बुद्धभूषण दिलीप यशवंते	47
36.	हर घर तिरंगा	किशोर कुमार साव	48
37.	राष्ट्रीय एकता का प्रतीक	निवेदित माथुर	49
38.	हमारा देश	अमित कुमार सिन्हा	50

टिप्पणी
पत्रिका की रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। मौलिकता एवं अन्य विवादों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपर्क सूत्र: राजभाषा विभाग-313-ए, तीसरा तल, इस्पात भवन
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई नगर (छ.ग.)-490001

हरीश सिंह चौहान
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन)
एवं कार्यालयाध्यक्ष
HARISH SINGH CHAUHAN
Asstt. Director (Impln.) & HOD

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
कमरा नं. 206, निर्माण सदन
52 ए, अरेरा हिल्स
भोपाल (म.प्र.), 462011
दूरभाष एवं फैक्स 0755 2553149

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग अपनी गृह पत्रिका **"महानदी"** का आगामी अंक **"हर घर तिरंगा"** विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि विद्यापति की शब्दावली में कहूँ तो 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' अर्थात देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरन्तर प्रयत्नशील है कि शहद समान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके। राजभाषा हिंदी निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है और निष्ठापूर्वक किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप देश में प्रशासनिक क्षेत्रों के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग निरन्तर बढ़ रहा है। किसी भी भाषा का विकास तभी संभव है जब हम उसका सम्मान करें और निःसंकोच उसका अधिकाधिक प्रयोग करें।

लेखन एवं साहित्य सृजन का कार्य सदैव ही प्रशंसनीय होता है। हिंदी में कामकाज हमारा नैतिक दायित्व है, लेखन के माध्यम से कार्मिकों में हिंदी के प्रति अनुराग जागृत होता है। पत्रिका प्रकाशन भी इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण कदम है। किसी भी नराकास की पत्रिका एक ओर जहाँ नराकास के कार्यकलापों का दर्पण होती है, वहीं हिंदी माध्यम से इसका प्रस्तुतिकरण राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने में भी सहायक होता है। मैं आशा करता हूँ कि आपके नराकास की यह पत्रिका अपने दोनों उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करेगी। मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूँ कि वे कार्यालयीन कार्यों में पूर्व की भांति ही राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें। पत्रिका के अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

हरीश सिंह चौहान

अनिर्बान दासगुप्ता
निदेशक प्रभारी
ANIRBAN DASGUPTA
Director In-charge

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है लेखन। अपनी लेखनी से उपजी रचनाओं के द्वारा हम अपने मनोभावों को ना केवल व्यक्त कर पाते हैं, वरन उन्हें एक बड़े पाठक वर्ग तक पहुँचा पाने में भी हम सफल होते हैं। यही कारण है कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश में जनजागरण लाने कवियों व लेखकों ने भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता व स्वराज्य का संदेश दिया।

'हर घर तिरंगा' अभियान ने संपूर्ण भारत को राष्ट्र ध्वज तिरंगे की महत्ता बतलाने और राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस पर केन्द्रित रचनाएँ निश्चित ही राष्ट्रीयता की भावना को और भी अधिक पुष्ट करने का कार्य करेंगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

अनिर्बान दासगुप्ता

पवन कुमार
कार्यपालक निदेशक
(मानव संसाधन)
PAWAN KUMAR
Executive Director (HR)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

हमारा राष्ट्रीय ध्वज हमारे देश की आन, बान और शान का प्रतीक है। तिरंगे को देखकर प्रत्येक भारतीय के हृदय में सम्मान का भाव स्वयमेव जागृत होता है। देश के प्रति समर्पण और निष्ठा का भाव ही हमें देश के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिये प्रेरित करता है। देश की उन्नति में ही प्रत्येक नागरिक की उन्नति सन्निहित है।

'हर घर तिरंगा' विशेषांक की रचनाएँ पाठकों के हृदय में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना को और अधिक सुदृढ़ करने में अवश्य ही सफल होंगी। प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा साथ ही हिंदी के प्रति अनुराग जागृत होगा।

पत्रिका **'महानदी'** प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

पवन

पवन कुमार

सौमिक डे
महाप्रबंधक
(संपर्क व प्रशासन, जनसंपर्क एवं प्रभारी राजभाषा)
SOUMIK DEY
GM (L&A PR & I/c Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग ने हमेशा ही राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति अपनी निष्ठा व समर्पण प्रदर्शित की है। राजभाषा हिंदी में समस्त कार्यालयीन कामकाज हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है, साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर आरंभ विभिन्न अभियानों में अपना योगदान देना भी हमारा एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण कर्तव्य है। देश की एकता और प्रत्येक नागरिक के हृदय में तिरंगे के लिए सम्मान व प्रेम का भाव जागृत करने आरंभ **'हर घर तिरंगा'** अभियान का भी हम सबने अनुपालन किया है।

तिरंगे को देखकर हम सबके हृदय में गौरव का भाव आता है, पूर्ण विश्वास है कि, इस पर केन्द्रित रचनाओं से हम सब राष्ट्रीयता की भावना से और भी अधिक ओतप्रोत होंगे। आइए हम एक बार फिर से राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराएँ।

जय हिंद, जय हिंदी।

सौमिक

सौमिक डे

जितेन्द्र दास मानिकपुरी
उप प्रबंधक (संपर्क व प्रशासन–राजभाषा)
JITENDRA DAS MANIKPURI
Dy. Manager (L&A - Rajbhasha)

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED
भिलाई इस्पात संयंत्र
BHILAI STEEL PLANT

संदेश

'महानदी' का 'हर घर तिरंगा' विशेषांक पाठकों को सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रप्रेम प्रत्येक भारतीय के हृदय में है। राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के प्रति हम समस्त भारतीयों के हृदय में सम्मान है। तिरंगे को देखकर हमारे हृदय में देश के प्रति प्रेम और गर्व की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीयता की भावना को पुष्ट करने के उद्देश्य से ही 'हर घर तिरंगा' अभियान शुरुआत की गई है।

आज भारत प्रत्येक क्षेत्र में तेज़ी से विकास कर रहा है। वैश्विक स्तर पर भारत तेज़ी से मज़बूत होती अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। इसका श्रेय देश के प्रत्येक नागरिक सहित संपूर्ण विश्व के अलग-अलग देशों में निवासरत असंख्य भारतीयों को जाता है, राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा विश्व के समस्त भारतीयों को जोड़ता है।

'हर घर तिरंगा' विशेषांक में प्रकाशित देशप्रेम से ओतप्रोत रचनाएँ हमें राष्ट्र के प्रति और भी अधिक निष्ठा भाव से समर्पण को प्रेरित करती हैं। पूर्ण विश्वास है कि, इस अंक को भी **'महानदी'** के पूर्व प्रकाशित अंकों की तरह पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।
जय हिंद, जय हिंदी।

जितेन्द्र दास मानिकपुरी

'हर घर तिरंगा'

दुर्ग रेल्वे स्टेशन से अपनी बेटी को छोड़कर जैसे ही मैं प्लेटफार्म से निकासी मार्ग होते हुए बाहर निकला, मेरी दृष्टि ऊँचे आसमान पर लहरा रहे बड़े से तिरंगे पर पड़ी, मैं रोमांचित हो उठा। मैं उसकी लहराती तीनों पट्टियों की अनुपम आभा को अपने मोबाइल कैमरे में कैद करने लगा। पास ही खड़े एक सज्जन ने मुझसे कहा- बड़ा प्यारा झंडा है। काश... कि यह घर-घर फहराया जाए। उनकी बातों से पूर्ण सहमत हो, 'हाँ अवश्य' बोलकर हम अपनी-अपनी राह हो लिए। कुछ ही दिनों पश्चात् हर घर तिरंगा' अभियान के अन्तर्गत घर-घर तिरंगा फहराने लगा।

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की उपरोक्त पंक्तियाँ बड़ी भावपूर्ण हैं। हम सभी भारत माता की ही तो संतान हैं। हम सबकी अस्मिता का प्रतीक हमारा तिरंगा है। यह महज़ कपड़े का टुकड़ा नहीं है, बल्कि यह हमारी एकता, स्वतंत्रता और विविधता में एकता का प्रतीक है। अपने आयताकार रूप में तीन रंगों केसरिया, सफेद और हरा रंग लिए अशोक चक्र के साथ माँ के आँचल का पवित्र शांति एवम् सुरक्षा देने वाला कवच है। सबसे ऊपर केसरिया रंग की पट्टी होती है, यह देश की ताकत और साहस का प्रतीक है। बीच में सफेद रंग की पट्टी शांति और सच्चाई का प्रतीक है। सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी भूमि की उर्वरता वृद्धि और शुभता का प्रतीक है। ध्वज की लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है। भारत की संविधान सभा ने राष्ट्रीय ध्वज के प्रारूप को 22 जुलाई, 1947 को अपनाया।

उद्देश्य: हर घर तिरंगा महाअभियान का उद्देश्य यह है कि भारतवर्ष के प्रत्येक घर में तिरंगा लहराए। हर भारतीय परिवार अपने घर पर अपनी अस्मिता के प्रतीक को फहराने के लिए प्रोत्साहित हो। यह हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बनकर हमें अपने कर्तव्यों के प्रति सजग, देशभक्ति की उत्कट भावना से ओतप्रोत करने और एक उत्कृष्ट नागरिक बनने में हमारा मार्ग प्रशस्त कर सके।

सह-अस्तित्व भाव का विकास :- 'वसुधैव कुटुम्बकम् की पवित्र भावना के पोषक हम सभी भारतवासी शांतिपूर्ण, सह-अस्तित्व के साथ सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखते हैं। हमारा तिरंगा हमें स्मरण दिलाता है कि हम विशाल भारतीय परिवार का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। हम भारत के प्रत्येक नागरिक के साथ अपनत्व भाव से जुड़कर भारत को मजबूत करने में सदैव तत्पर हैं।

सर्वप्रथम राष्ट्र के सम्मान का भावः- राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' फहराकर हम अपने देश व उसके महत्वपूर्ण मूल्यों का सम्मान करना सीख लेते हैं। यह हमारी आदत में शामिल हो संस्कार का रूप ले लेता है। हमारे देश के नायकों के अमर बलिदान के प्रति कृतज्ञता का भाव लिए हम अपने देश के विकास की मुख्यधारा में सहज रूप से शामिल हो जाते हैं।

अनेकता में एकता - हमारी विशिष्टता:- अनेकता में एकता ही हमारी विशिष्ट पहचान है। विभिन्न धर्म, भाषा, रंग, वेशभूषा, खान पान की मिश्रित संस्कृति ही हमें विशेष पहचान देती है। 'तिरंगा' हमें हमारी इसी विशिष्टता से एक बनाता है। भारत के चाहे जिस कोने में रहे, सर्वप्रथम हम भारतीय ही हैं।

हर घर तिरंगा अभियान के प्रभाव:-

1. ध्वज को अपनाने में वृद्धि:- इस अभिनव पहल -से लगभग सम्पूर्ण भारतीय परिवार अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहे हैं, इससे सम्पूर्ण वातावरण व जन - मानस में देशभक्ति का भाव बढ़ रहा है।

२. जागरुकता : शालेय एवम् महाविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा इस अभियान में महत्त्वपूर्ण भागीदारी एवम् सक्रियता से हर परिवार इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित हो रहा है।

3. सामुदायिकता : 140 करोड़ की आबादी वाले विश्व के दूसरे सबसे बड़े देश भारतवर्ष में विभिन्न समुदायों के बीच एकता एवम् विश्व बंधुत्व के मूल्यों को प्रतिष्ठित कर उनके संवर्धन में हमारा 'तिरंगा' सर्वोत्तम स्थान रखता है।

4. संस्कार संवर्धन-जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।" माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। इस शुभ भावना का स्वाभाविक पुष्पन, पल्लवन धीरे-धीर संस्कार का रूप ले परिवर्धित हो रहा है, देशभक्ति के नवांकुर अवश्य प्रस्फुटित होने लगे हैं।

5. मातृ शक्ति के प्रति निष्ठा भाव का अभ्युदय :- विश्व में हम भारतवासी ही अपने देश को 'माँ' का विशिष्ट स्थान देकर भारत माता' नाम से पुकारते हैं। मानव समाज की प्रथम गुरु" माँ "को प्रतिष्ठित करने का सत्संकल्प भी स्वाभाविक रूप से हर घर तिरंगा 'अभियान से घर-घर पुष्ट होने लगा है।

अभियान की चुनौतियाँ-

'हर घर तिरंगा एक सुंदर पहल है। इसका घर-घर फहराया जाना अपने उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य ही सफल हुआ है परन्तु इसके निपटान की चुनौतियाँ भी हैं, कतिपय समाधान निम्नानुसार हैं।

1. स्कूल के विद्यार्थियों एवम् सभी सामाजिक संगठनों को इस हेतु अवश्य ही जागरूक किया जाना चाहिए कि भारतीय ध्वज संहिता, 2002 और 'राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, 1971 के बारे में सभी को जागरूक एवम् शिक्षित किया जा सके ।

2. अपने बच्चों को बचपन से ही तिरंगे के सम्मान की बातें बताई व सिखाई जाएँ, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ सुदृढ़ परम्परा को सम्मान के साथ जारी रख सकें।

प्रत्येक इकाई नागरिक की महती भूमिका -

इस अभियान की सफलता, हम प्रत्येक नागरिक पर निर्भर है। हमें इस आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी। हम अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होकर इसे पूर्णता की ओर ले जा सकते हैं।

खूबसूरत पहल हर घर तिरंगा, जो कि हर भारतीय के मन में देशभक्ति को बढ़ावा दे रही है। हम अपने गौरवशाली अतीत से सीख लेकर, सुन्दर वर्तमान के साथ भावी भविष्य की देश की संकल्पना को साकार करें, ताकि हमारा भारत, सम्पूर्ण विश्व में अग्रणी बने। हम कंधे से कंधा मिलाकर अपने इस पावन तिरंगे को न केवल विशिष्ट अवसरों पर बल्कि हर दिन देश के प्रति अपने अटूट प्रेम के प्रतीक रूप में ऊँचा फहराएँ।

बस यही अभिलाषा है-

"शान से, सम्मान से, लहराए अब हर घर तिरंगा ।
हम सभी की आन, बान और शान हो, प्यारा तिरंगा॥"

केदारनाथ सोनबेर
व्याख्याता, शिक्षा विभाग
भिलाई इस्पात संयत्र

पिता सा शहर - भिलाई

तू धरा मेरे संघर्षों की, उच्चाकांक्षाओं का तरुवर।
बाँहों सी राहें भर विशाल, कर पंख तरंगित नील गगन।
मैं नाम तेरे जाना जाऊँ, भर शील धैर्य प्रतिपल मुझमें।
तूने है भरा तुझसे ही जिया, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।
रम जाने को, जी जाने को, जन-जन में अलख जगाने को।

तू ही तो है मेरा संबल, इस सकल विश्व पर छाने को।
हरियाली सी मृदुता मुझमें, इस्पात सदृश साहस मुझमें।
तूने है भरा, तुझसे ही जिया, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।

बासंती सा आँगन तेरा, हर दिन तेरे त्योहार से।
तेरी फुलवारी बगिया ने, जीवन है भरा मधुमासों से।
तू सरल और तू ही है कठिन, वो करे मेरा क़द और बड़ा।
तूने है भरा, तुझसे ही जिया, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।

दुनिया की तरलता, भीड़भाड़, झंझावात और तपती दिशाएँ।
सब कर विजय, मैं लौटूँ जब, तू मुस्काए मन हर्षाए।
तुझसे उबरूँ, तुझमें सिमटूँ, जीवन-जन-जग पर छा जाऊँ।
तूने है भरा, तुझसे ही जिया, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।

तेरा पतझड़ तेरा वसंत, मेरे नाम सा मुझमें अमिट अंत।
तेरे मौसम, तेरी बातें, यही शेष भरा मुझमें अनंत।
तुझसे ही रगों में स्पंदन, आशीष तेरा मेरा चंदन।
तूने है भरा, तुझसे ही जिया, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।

तू लहराए तू मुस्काए, तेरे होने की आभा दमके।
तेरी मज़बूत काया से, भारत माँ का मस्तक चमके।
हम खेले, सीखे और बढ़े, सुंदरतम देश श्रृंगार बनें।
तुझसे हों भरे, तुझसे ही जिएँ, हे इस्पात धरा तेरा वंदन।।
हे स्नेहिल पिता, तेरा अभिनंदन।।

मनोरमा कुमारी
निरीक्षक
केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

लिख लिख कर

लिख लिख कर इबादत मिटाता हूँ।
अपनी चाहत को तुझसे छिपाता हूँ।।
तू ग़ैर नहीं है, जानता हूँ ये फिर भी
तुझे अपनों में नहीं कभी पाता हूँ।।

लिख लिख कर तुझसे छिपाता हूँ।।
न जाने कहाँ कमी थी चाहत में मेरी,
तुझे चाह कर भी चाह नहीं पाता हूँ।।
लिख लिख कर तुझसे छिपाता हूँ।।

शब्द साथ होते नहीं,
जब तू सामने होती है
कहना होता है बहुत कुछ,
कुछ कह नहीं पाता हूँ।।

लिख लिख कर तुझसे छिपाता हूँ।।
मेहनत, किस्मत और अपनों के
आशीर्वाद से पाया बहुत कुछ है
फिर भी जो तुझे चाहे,
ऐसा शख्स नहीं बन पाता हूँ।।
लिख लिख कर तुझसे छिपाता हूँ।।

कमल नारायण सोनी
प्रधान पाठक,
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

हर घर तिरंगा

भारत देश विविधताओं से भरा हुआ है और यहाँ एकता की मिसाल तिरंगे के रूप में दी जाती है। तिरंगा हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज है, जो भारतीय संविधान द्वारा 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया। इसमें तीन रंग होते हैं - केसरिया, सफेद और हरा, जो क्रमशः साहस, शांति और समृद्धि का प्रतीक हैं। बीच में अशोक चक्र है, जो प्रगति और धर्म का प्रतीक है।

"हर घर तिरंगा" अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत शुरू किया गया था। भारत की आज़ादी के 75 वर्षों का उत्सव "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के रूप में मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य हर भारतीय नागरिक के घर पर तिरंगा फहराना और देश के प्रति प्यार व सम्मान की भावना को और गहरा करना है। यह अभियान हर नागरिक को अपने घर पर तिरंगा फहराने का एक अवसर देता है और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। यह पहल प्रत्येक भारतीय में अपने देश के प्रति गर्व, सम्मान और जिम्मेदारी का एहसास कराती है। तिरंगा हर भारतीय का गौरव है, और इसे हर घर में फहराना देश के प्रति अपने सम्मान को दर्शाने का प्रतीक है। इसके माध्यम से हर नागरिक तिरंगे का सम्मान करते हुए राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति अपनी निष्ठा दिखाता है।

तिरंगे का महत्व

भारत का तिरंगा हमारे देश की सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक धरोहर का प्रतीक है। तिरंगे के केसरिया रंग से साहस, सफेद से शांति और हरे से समृद्धि का संदेश मिलता है। मध्य में स्थित अशोक चक्र हमारे प्राचीन गौरव और कानून के प्रति हमारी निष्ठा का प्रतीक है। यह हमें प्रगति और विकास की ओर निरंतर बढ़ने का संदेश देता है। हर भारतीय के लिए तिरंगा एक पवित्र धरोहर है, जिसके प्रति सम्मान और गौरव का भाव हृदय में संजोए रखना चाहिए।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

"हर घर तिरंगा" अभियान ने हमारे समाज में एक नई ऊर्जा का संचार किया है। इससे न केवल नागरिकों में जागरूकता आई है, बल्कि भारत के विभिन्न कोनों, समुदायों और धर्मों में भी एकता का संदेश गया है। यह अभियान भारत के हर व्यक्ति को एकसमान करता है और यह दर्शाता है कि चाहे हम किसी भी क्षेत्र, भाषा या संस्कृति से आते हों, हम सभी एक ही तिरंगे के नीचे एकजुट हैं।

हर घर तिरंगा अभियान का ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भ

"हर घर तिरंगा" अभियान का आरंभ स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने और स्वतंत्रता संग्राम में शहीद हुए वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से किया गया है। भारत के इतिहास में तिरंगा हमेशा से एक प्रेरणा का स्रोत रहा है। महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद जैसे कई स्वतंत्रता सेनानियों ने तिरंगे को अपना ध्येय बनाकर स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रयास किया। तिरंगा हमारे पूर्वजों की कड़ी मेहनत, बलिदान और त्याग का प्रतीक है।

शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्त्व

"हर घर तिरंगा" अभियान विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक प्रेरणादायक है। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में यह अभियान बच्चों और युवाओं को राष्ट्र प्रेम, अनुशासन और देशभक्ति के महत्व को समझने का अवसर देता है। बच्चों को तिरंगे के रंगों और अशोक चक्र के प्रतीकों का अर्थ समझाने से उनमें देश के प्रति गर्व और सम्मान की भावना विकसित होती है। शिक्षा के माध्यम से, यह अभियान भावी पीढ़ी को अपने देश के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों से जोड़ता है। इससे युवा पीढ़ी में अपनी पहचान और जड़ों के प्रति जागरूकता बढ़ती है, जो भविष्य में राष्ट्र निर्माण में सहायक साबित होती है।

पर्यटन और अर्थव्यवस्था में योगदान

"हर घर तिरंगा" अभियान के माध्यम से भारतीय पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिला है। यह अभियान जब देश के कोने-कोने में पहुंचता है, तो लोग स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करने के लिए प्रेरित होते हैं। यह पर्यटन उद्योग को एक नई दिशा देता है, जिससे स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिलता है और देश की अर्थव्यवस्था में भी सुधार होता है। अभियान के अंतर्गत लोगों को राष्ट्र से जुड़े स्मारकों, संग्रहालयों और ऐतिहासिक स्थलों का दौरा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इससे भारत की सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति जागरूकता बढ़ी और स्थानीय उद्योगों में भी रोज़गार के अवसर पैदा हुए हैं।

समाज में एकता और सद्भावना का संदेश

"हर घर तिरंगा" अभियान का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह है कि हम सभी एक हैं, चाहे हमारी भाषा, धर्म या संस्कृति अलग हो। तिरंगा सभी भारतीयों के लिए एक सामान्य प्रतीक है, जो हमें एकता और समरसता के सूत्र में बांधता है। तिरंगे के नीचे हर भारतीय को यह समझ में आता है कि हम सभी एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं और एक-दूसरे के प्रति प्रेम और आदर का भाव रखते हैं।

अभियान के सकारात्मक प्रभाव

"हर घर तिरंगा" अभियान के कारण राष्ट्र में सकारात्मक बदलाव आए हैं। इस अभियान के माध्यम से लोग तिरंगे के महत्व को और अधिक समझने लगे हैं और अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना को प्रकट करने के लिए प्रेरित हुए हैं। इससे भारतीय समाज में एक नई ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार हुआ है, जो देश को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्ष

"हर घर तिरंगा" अभियान ने भारत को एक नई दिशा दी है और प्रत्येक नागरिक के दिल में देशप्रेम की भावना को मजबूत किया है। यह अभियान सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीयों की भावनाओं का प्रतीक है, जो हमें याद दिलाता है कि हम सभी को अपने देश के प्रति निष्ठा और समर्पण का भाव रखना चाहिए। तिरंगे के नीचे एकजुट होकर हम एक सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं। "हर घर तिरंगा" अभियान से हमें न केवल अपने देश पर गर्व होता है, बल्कि यह भी सीख मिलती है कि हम सभी को अपनी पहचान, संस्कृति और देश के सम्मान की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

सिंधुजा प्राथुरी
लिपिक, बैंक ऑफ बडौदा
अंचल कार्यालय

तिरंगा

भारत के कण कण में तिरंगे का नूर है।
यही हमारा गौरव, यही हमारा गुरुर है।
देशभक्ति का रंग चढ़ा है, हर देशभक्त के चेहरे पर।
मन खुशी से झूम रहा, दिल में इक सुरूर है।

जब लहराये यह जोर से।
तब दिखे दुनिया के हर छोर से।
बच्चा बच्चा आज बँधा है, देशप्रेम की डोर से।
ओलंपिक भी गूँज रहा है, जण गण मन के शोर से।

इसकी शान ही हमारा मान है।
यह आजाद हिंद की पहचान है।
यही है गंगा, यही हिमालय।
ये अपना हिंदुस्तान है।

आओ झुक कर इसे सलाम करें।
सब मिलकर इसका विजय गान करें।
इसकी कीर्ति, इसका वैभव।
धरती से आसमान करें।

यह अस्तित्व है आज़ादी का।
प्रतीक स्वतंत्र आबादी का।
इसकी नई ऊँचाइयाँ और नये आयाम करें।

आज बंदिशों को तोड़कर और सारे काम छोड़कर।
सरहदों के छोर पर, हर गली और मोड़ पर।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।
सर्वधर्म को जोड़कर।

जण गण मन की दहाड़ पर।
खिड़कियों और किवाड़ पर।
बस्तियों और उजाड़ पर।
हर जंगल और पहाड़ पर।

बर्फीले चट्टान पर और तपते रेगिस्तान पर।
कारखानों और दुकान पर, कच्चे पक्के मकान पर।
जलपोतों और विमान पर, युद्ध के मैदान पर।
धरती और आसमान पर, शहीदों के अभिज्ञान पर।

घर घर में तिरंगा फहराएंगे।
एक स्वर में सब मिलकर वंदे मातरम् गाएँगे

अनिल कुमार अग्रवाल
कनिष्ठ प्रबंधक, प्लांट गैरेज,
भिलाई इस्पात संयंत्र

संवाद और संवेदना से सँवरता है व्यक्तित्व

भाषा के चार कौशल हैं - सुनना बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा का व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ा योगदान है। भाषा के बिना ज्ञान की प्रक्रिया अधूरी है। भाषा विहीन व्यक्ति ज्ञान के प्रवाह के साथ स्वयं को जोड़ नहीं सकता।

भाषा कौशल में सबसे पहले सुनना है। इसीलिए जब बच्चा छोटा रहता है माँ उसे लोरी गाकर सुनाती है। बच्चा लोरी के शब्दों भावों को समझने लगता है या फिर उसके साथ जुड़ जाता है। समझ से पहले बच्चों के बाल मस्तिष्क में शब्दों के लय-ताल और उच्चारण का प्रभाव पड़ता है। इसीलिए भाषा को मातृभाषा के रूप में भी जाना जाता है। बच्चों का पहला जो संबंध है वह माँ के साथ है। और यह संबंध भाषा के विकास में सहयोगी होता है। बच्चा तुतलाता हुआ जो बोलता है या बोल सकता है माँ उन शब्दों का उच्चारण करती है। बच्चा उसे दोहराता है, सुनता है और धीरे-धीरे भाषा के प्रवाह को अंगीकार करने लगता है।

कभी-कभी जब मैं वर्तमान समय की विडंबनाओं को समझने का प्रयास करता हूँ, तो मुझे लगता है कि वर्तमान में मातृभाषा भी कमज़ोर हो रही है। क्योंकि माँ के पास भी बच्चों के लिए समय कम होने लगा है। माँ का पक्ष जब कमज़ोर होता है तो मनुष्य के व्यक्तित्व का बहुत सा भाग कमज़ोर पड़ने लगता है। माँ को बच्चों के साथ बात करने का समय निकालना चाहिए। पहले यह सहज था किंतु अब चूँकि माता के पास भी बाहरी दुनियाँ के कर्तव्य अधिक हो गए हैं, इसलिए परवरिश में चुनौतियाँ बढ़ गई हैं।

बच्चा जिस भाषा को सहज, सरल रूप से सुनता है धीरे-धीरे उसे ही बोलने लगता है। बोलना भाषा के कौशलों में दूसरे स्थान पर है। जब सुनने के अवसर घटते हैं तब बोलना भी कठिन या कमज़ोर होने लगता है। भाषा कौशल का एक पक्ष दूसरे पक्ष को प्रभावित करता है।

भाषा कौशल का तीसरा अंग है पढ़ना। एआई और इंटरनेट के युग में छात्रों को पढ़ना फ़िज़ूल लगने लगा है। सच्चाई इसके विपरीत है। पढ़ने का कौशल केवल जानकारी नहीं बढ़ाता अपितु वह व्यक्तित्व के लिए अनेक गुणों को विकसित करता है। पढ़ने से अनुशासन आता है। पढ़ने से सोने की शक्ति बढ़ती है। पढ़ने से अभिव्यक्ति का कौशल भी बढ़ता है। भाषा कौशल का अंतिम कौशल लिखना है। भाषा कौशल का यह क्रम ही वैज्ञानिक है। कई बार भाषा को सिखाने वाले इस क्रम को एकदम उल्टा कर देते हैं। जिसमें लिखना पहले क्रम में आ जाता है। यह पूर्णतया गलत है।

पिछले दिनों केन्द्रीय विद्यालय में बाल वाटिका के प्रवेश का उत्सव आयोजित किया गया था। उसमें मुझे अभिभावकों से बात करने का अवसर मिला। मैंने अभिभावकों को सुझाव देते हुए कहा कि बच्चों के साथ बात करना शुरू करें। और बात करते हुए उनकी बातों को अधिक सुने। उनके ही स्तर पर बातचीत करने का प्रयत्न करें। बाल वाटिका में प्रवेश की उम्र 3 से 4 वर्ष की है। इस समय बच्चे तेजी से दुनियाँ को देख रहे होते हैं। दुनियाँ से जुड़ रहे होते हैं। उनकी समझ एक सुपर कंप्यूटर की तरह काम कर रही होती है। उनके पास बोलने और बताने को बहुत कुछ होता है। हम बड़ों को हो सकता है, वे सारी बातें उपयोगी या महत्वपूर्ण न लगती हो किंतु इन बातों का व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

बच्चों को बोलने के अधिक अवसर देने चाहिए। बच्चों को सुनने के लिए माता-पिता और शिक्षकों को तैयार रहना चाहिए। जब हम बच्चों को सुनते हैं तो बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है। उनकी अभिव्यक्ति में निखार आता है। बच्चों को माता-पिता इस उम्र में सुनाएँ कम, सुनें ज्यादा।

संवाद का अर्थ है दो लोगों का परस्पर आपस में बात करना। इसमें दोनों की सहभागिता बराबर की होती है। जहाँ संवाद होते हैं वहाँ विवाद नहीं होता। संवाद के साथ-साथ संयम का भी विकास होता है। यही संवेदना और सहनशीलता को भी विकसित करता है। अभिभावकों को बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना चाहिए। मैं जब अभिभावकों के साथ बात करता हूँ, तो मुझे एक और चुनौती दिखाई देती है। कुछ अभिभावक कहते हैं कि हमारे पास बच्चों से बात करने के लिए समय नहीं है। हम जब बच्चों से बात करने या बच्चों के साथ बैठने को कम महत्वपूर्ण समझते हैं, तब हमारे पास समय नहीं होता। जबकि सच्चाई यह है कि हम सब की ही नहीं अपितु देश और समाज की भी असली पूँजी हमारे बच्चे ही हैं। इन्हीं बच्चों को देश का, दुनिया का भविष्य भी बताया गया है। अगर हम इनके निर्माण में योगदान नहीं देते, उनके लिए समय नहीं निकालते, तो हमें समझना होगा कि हम स्वयं और समाज का बहुत बड़ा नुकसान कर रहे हैं।

बच्चों के साथ बात करते शालीनता के साथ साथ धैर्य का परिचय देना चाहिए। भाषा की विनम्रता और सरलता धीरे-धीरे व्यक्तित्व में समाहित होती है। अगर हमारी भाषा में उत्तेजना है, आवेग है, आवेश है, गुस्सा है तो वह जल्द ही हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। भाषा के माध्यम से हम संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। भाषा को विकसित करने में जितनी भूमिका विद्यालय या शिक्षक की है, उतनी ही बड़ी भूमिका घर, परिवार और अभिभावक की भी है। वर्तमान में बच्चे मौलिक रूप से लिखने का सामर्थ्य खो रहे हैं। इसके पीछे भी भाषा का सही ढंग से विकसित नहीं होना एक बड़ा कारण है। बच्चों को सुनने, बोलने और पढ़ने का अधिक अवसर देना चाहिए। कॉपियों को भर देने से, लगातार लिखने मात्र से भाषा विकसित नहीं होती है। सुनना, बोलना और पढ़ना उसके बाद लिखना चाहिए। जिसे सुनना आ जाता है उसे बोलना भी आ जाता है जिसे पढ़ने आ जाता है उसे लिखना भी आ जाता है। व्यक्तित्व के निर्माण में इन चार भाषा कौशलों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

बच्चों के भीतर संवेदनाओं को जागृत करना भी ज्ञान या शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है। यह संवेदनशीलता तभी विकसित हो सकती है जब हम अपने कर्तव्यों को सामाजिक रूप प्रदान करते हैं। हमारा स्वयं के लिए कर्तव्य है यह सभी जानते हैं किंतु हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य भी हैं। जब संवेदनाएँ जागृत होती है तब हम विनम्र होकर दूसरों के सहयोग के लिए तत्पर होते हैं। इसीलिए व्यक्तित्व के विकास में दुख को जानना भी आवश्यक है। गौतम बुद्ध ने इसीलिए आर्य सत्य में इसे भी समाहित किया था। बच्चों को गरीबों, असहायों के सहयोग के लिए भी प्रेरित करना चाहिए । हमने अपने विद्यालयों में पीएम श्री की गतिविधियों को आयोजित करते हुए समूह सहभागिता के कार्यक्रमों में बच्चों के भीतर मूल्यों को विकसित करने के लिए वृद्ध आश्रम तथा दुखी जनों के बीच ले जाने का प्रयत्न किया है। मुझे यह जानकर कर संतोष हुआ कि वहाँ जाने पर बहुत से बच्चों का हृदय द्रवित हुआ। कुछ बच्चों के आँसू भी निकल आए। यह आँसू भी व्यक्तित्व का सही और महत्वपूर्ण पक्ष है। यह संवेदनशीलता को प्रदर्शित करता है। हमारी संवेदनाएँ ही हमें मनुष्य बनाती हैं। संवेदनाओं के साथ ही व्यक्ति अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को पहचान कर समाज और राष्ट्र में उपयोगी सिद्ध होता है

उमाशंकर मिश्रा
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

अलंकृता... वह बेवफ़ा नहीं थी

सी.पी., यानी कनॉट प्लेस। यह दिल्ली का दिल कहा जाता है। बहुत से दिल यहाँ मिलते और बिछड़ते हैं। दिल्ली में पढ़ने वाले युवाओं के दिल में कहीं ना कहीं कनॉट प्लेस बसता है और उससे जुड़ी खट्टी मीठी यादें।

आज कनॉट प्लेस से मुड़कर पालिका बाजार की ओर बढ़ ही रहा था कि पुराने दो दोस्तों से मुलाकात हो गई।

विजय और विनोद दोनों का शरीर हृष्ट पुष्ट था। दोनों का स्वभाव भी लड़ने-भिड़ने वाला था। कई बार मेरी जानकारी के बगैर इन्होंने मेरे लिए लड़ाई लड़ी थी। इसकी जानकारी मुझे कई दिनों बाद मिली। यह पता चलने पर मेरी दोस्ती का रुझान बढ़ने लगा और बहुत से तथाकथित छात्र आंदोलनों में हम साथ भी रहे। आज दोनों ने मुझे देखकर रहस्यमय मुस्कान बिखेरी।

वैसे भी कनॉट प्लेस की सड़कों, गलियों में बहुत सी यादें बिखरी हुई है। किंतु इन दोनों के मिल जाने से कुछ विशेष याद आ जाना स्वाभाविक था। दोनों ने मुझे छेड़ा और कहा- और भाई क्या समाचार हैं? और अभी भी बात होती है या नहीं? अलंकृता क्या कर रही है?

अलंकृता यह नाम अब धड़कनों को धड़काने से ज्यादा दर्द को उभारता है। दोस्त पुराने थे। पुरानी दास्तान को जानने वाले थे। इसलिए उनके सवालों से बचना मुश्किल था। और जो सच था उन्हें उस पर यकीन नहीं था। उन्हें सच कैसे कहता...? अब उतनी बात नहीं होती, कभी कभार हाल-चाल पूछ लेते हैं, अब दोनों के रास्ते अलग हैं। इतना झूठ कह कर टाल दिया। दोनों दोस्त किसी विशेष मकसद से कुछ खरीदारी के लिए आए थे। साथ में एक खस्ता चाट और कुल्फी के बाद हमारे रास्ते अलग-अलग हुए।

5 साल बाद अलंकृता नाम सुनकर गिटार के तार को जैसे किसी ने कसकर हिला दिया हो... अदृश्य सी झंकार तन मन को हिलाने लगी। लग रहा था जैसे झील की शांत जल राशि में किसी ने कंकड़ फेंक कर असंख्य लहरें पैदा कर दी हो।

अलंकृता एक शांत स्वभाव की लड़की थी थी। छरहरा बदन। दिल्ली की होकर भी उसमें ग्रामीण झलक मिलती थी। गेहुआ रंग, लंबे बाल, सपाट ललाट, बेदाग चेहरे पर छोटी सी काली बिंदी, उसकी मुस्कान फ़िल्म अभिनेत्री से प्रतिस्पर्धा करती थी। सादगी उसके लिबास में ही नहीं व्यवहार में भी थी।

कॉलेज के दिनों में मैं अकेले रहा करता था। इसलिए टिफिन लाने की कभी सोचा नहीं था। नाश्ता करके कॉलेज फिर वहाँ से 5:00 बजे वापसी। बीच में कभी कैंटीन का चक्कर लगा लिया तो लगा लिया। एक बार अलंकृता ने मुझे आवाज दी। लंच का समय था। साथ बैठकर खाने का निमंत्रण। उसकी दो सहेलियाँ भी थीं साथ में। यहीं से हमारी आत्मीयता बढ़ी। वह अपना टिफिन हमेशा यह कह करके खोला करती कि तुम्हारे लिए भी इसमें दो रोटी मैंने रखी है। यहीं से उसका एहसान शुरू हुआ जो कब दिल में उतर गया बताना मुश्किल है। एक दूसरे के साथ बात करना अच्छा लगने लगा। कुछ विषयों पर हम एक दूसरे के विचार शेयर करने लगे। वह एनसीआर की थी। उसे लगभग 2 घंटे लगते थे, कॉलेज आने में। एक बार ठंड के दिन थे इसी लालच में कि 2 घंटे साथ में रहेंगे मैंने किसी काम का बहाना बनाया और उसी की बस में बैठा। उसने मुझे अपने पास बुलाया और बिठाया। कहाँ? कैसे ? क्यों? पड़ताल चली। धीरे-धीरे हम सब एक दूसरे के विचारों से अवगत होते रहे। कॉलेज में नज़रें एक दूसरे को ढूंढती थी। वैसे लड़के कभी-कभी कॉलेज जाते थे किंतु मेरे पास अब रोज कॉलेज जाने का एक बहाना था।

एक दिन कॉलेज में शादी का कार्ड आया। अलंकृता की शादी का कार्ड था। उसने हमारे प्राध्यापकों को दिया। मुझे अफसोस हुआ और मैं वहाँ से निकल गया। मुझे लगा अब खोने को क्या रह गया। एक दुख, एक दर्द भरा एहसास रहा। उसके बाद वह कभी नहीं दिखाई दी। परीक्षा के दौरान मैंने उसे नहीं, उसके मांग का सिंदूर देखा था।

मन में एहसास रहा कि जब लैला और मजनूँ एक नहीं हुए तो हमारी क्या बिसात। मन ने मान लिया कि हर मोहब्बत का मुकम्मल अंत नहीं होता। फिर दिल्ली वाली लड़की तो दिल्ली वाली ही है। उससे वफ़ा की आस कैसी? मन जब भी अकेला होता, तस्वीरे यार देखता। उसके दिए एक दो उपहार जिसमें एक पर्स और बेल्ट था। मेरे साथ थे। बस उसी से ज़ख्म को कभी-कभी कुरेदकर हरा कर लिया करता था। इस ज़ख्म के दर्द भरे एहसास के साथ 14 साल बीत गए।

14 साल बाद एक फोन आया। पहला शब्द मुस्कान, खुशी से भरा मैं अलंकृता, अजय तुम कैसे हो? हृदय के सारे तार झंकृत हो गए। कुछ पलों तक जैसे सृष्टि थम गई हो। मैं स्तब्ध हो गया। कुछ कहने के लिए नहीं था। एहसास गहरा हो गया। उसने बताया कि 14 सालों से वह मुझे ढूँढ रही है। एक एक पल, एक एक क्षण उसने मुझे याद किया। कभी भूल नहीं सकी। एक दूसरे की खैरियत पूछी। घर गृहस्थी की बात हुई। उसने बताया कईयों को फोन किया लेकिन कहीं से आपका कोई पता नहीं मिला।

मैंने उससे कहा- क्या तुम्हें मेरे प्रेम का एहसास था? उसने उत्तर देने की बजाय पलट कर यही प्रश्न मुझे पूछा? मैंने कहा- मुझे यकीन नहीं था क्योंकि प्यार करने और निभाने की शायद मुझ में हैसियत नहीं थी। जब वही प्रश्न मैंने दोबारा उससे पूछा तो उसकी आँखों में आँसू थे। और उसने कहा- मैंने तुम्हारी आँखें पढ़ ली थी। लड़कियों को भगवान ने यह अद्भुत शक्ति दी है कि वे प्यार को पहचान लेती हैं। मर्यादा, डर, सामाजिक बंधन भले ही उसे साहस न दें, किंतु उसका दिल भी धड़कना जानता है। उसने कहा कि तुम लड़के थे फिर भी तुमने कुछ कहने की हिम्मत क्यों नहीं की? मेरे पास इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं था। मैं जानता था कि उस वक्त मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं था।

पढ़ाई के समय में हम सब साथ में रहते थे। दो-तीन दोस्त थे। सबको धीरे-धीरे अलंकृता की जानकारी हो गई थी। कभी-कभी लैंडलाइन पर फोन आता था। बातें लंबी हो जाती थी। बातों में कभी भी रोमांस जैसा कुछ नहीं था। उसने बताया कि सगाई और शादी की रात को भी उसने फोन किया था। उसे अंतिम विकल्प की तलाश और आस भी थी। मेरे जूनियर दोस्त ने फोन उठाया और बहुत समय तक उसे छेड़ते हुए भाभी जी नमस्ते कहकर बात करने लगा और मुझे फोन नहीं दिया। बात हँसी मज़ाक तक थी। वह डायरेक्टली कैसे बताती कि आज मेरी शादी है।

उसने अपनी शादी के लिए हाँ करने का भी एक कारण बताया। उसके पाँच भाई थे। उनमें से तीन ऐसे थे जिन्हें खतरनाक श्रेणी में रखा जा सकता है। उसने बताया कि शादी के लिए सिर्फ हाँ इसलिए कहना पड़ा क्योंकि उन्होंने कहा था या तो तुम हाँ कहो या फिर हम उसे निपटाते हैं, जिसे तुम चाहती हो। उस समय उनके हाथ में बंदूक थी। उसने बड़ी ही सहजता से कहा कि अगर उन्होंने मुझे यह ऑप्शन दिया होता कि यह गोली तुम्हारे सीने पर दाग दी जाएगी तो शायद मैं इतनी मज़बूत थी कि ना कर देती। किंतु ऑप्शन तुम्हारी जान से जुड़ा था और मुझे पता था कि तुम अपनी माता-पिता की इकलौती संतान हो।

किसी लड़की के लिए यह कितना कठिन समय होगा, हम सोच नहीं सकते। कोई हमें इतनी शिद्दत से चाहेगी कि, अपनी ज़िन्दगी, अपने सपने दाँव पर लगाकर मुझे बचाएगी, मालूम नहीं था। आज मुझे अपनी किस्मत और सोच पर तरस आ रहा था। मैंने जिसे बेवफ़ा समझा था, उसने बवफ़ा की मिसाल कायम की थी।

प्रेम, चाहत को हासिल करना नहीं, अपितु उसे बचाए रखना सिखाता है। इस बात के लिए भाग्य को धन्यवाद करना चाहता हूँ कि मैं ग़लतफ़हमी के साथ नहीं मरा। 14 साल बाद ही सही ग़लतफ़हमी के भँवर से बाहर तो निकला। 14 साल बाद एक बार फिर मुलाक़ात हुई। दोनों का आमना सामना हुआ। आँखें चार हुई। कुछ देर एक दूसरे को निहारते रहे और निस्तब्ध, मौन होकर सोचते रहे बात कहाँ से शुरू करें। लौटते वक्त उसने हाथ मिलाया। मैं उसकी कोमलता और ओझल प्रेम को उन

हाथों में तलाशने लगा। उसने उस वक्त यही कहा कि जिस रास्ते चलना नहीं, वहाँ खड़े भी क्यों होना। सचमुच वह देवी निष्पाप और निश्छल थी। मैं अबोध समझ नहीं सका। मैं बेसब्री से अगले जन्म का इंतज़ार करूंगी। कभी कुछ मांग सकी तो ईश्वर से तुम्हें मांगूंगी। मन बार-बार चीख कर अब यही कहता है... वह बेवफ़ा नहीं थी।

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

अबला नहीं नारी हो तुम

सृजन किया तुमने जहाँ,
वही तुम्हारा विनाश क्यूँ ?
शक्ति की मूरत हो, फिर भी,
तुम पर शक्ति का प्रयास क्यूँ ?
खोलो अपनी आँखें ज़रा तुम, अबला नहीं नारी हो तुम।

यूँ तो शिक्षा की देवी तुम, शिक्षा अब भी दूर क्यूँ तुमसे ?
अन्नपूर्णा भी हो फिर क्यूँ, मोहताज़ दूसरों की पूछो दिल से।
पहचानो अपने आप को तुम, अबला नहीं नारी हो तुम।

मुरादें पूरी करने को,
तुमको पुकारा जाता है।
आये धरती में तो अब भी,
क्यूँ तुमको ही मारा जाता है।
खुद की ही आवाज़ बनो तुम, अबला नहीं नारी हो तुम।

छू सकती हो आसमां भी, गर मन में ये ठानो।
माँ बहन बेटी तो हो तुम, खुद भी कुछ हो ये जानो।
फैलाकर पंख आज़ाद उड़ो तुम, अबला नहीं नारी हो तुम।

- वीरेन्द्र कुमार ओगले, महाप्रबंधक (एल. डी. सी. पी.)
भा.इ.सं.

पागल मन

कितने रिश्तों के धागों में
बँधा रहता है ये,
कभी चुपचाप तो कभी
बहुत कुछ कहता है ये।
बुनता है हज़ार सपने,
और उन सपनों में खो जाता है कहीं,
तो कभी टूटे ख्वाबों की चुभन में
सबसे बेखबर हो जाता है, यूँ ही।

कुछ पाने में कभी छूट जाता है बहुत,
रहता है ये इस कश्मकश में भी,
कभी तो मज़बूत बनाता है,
तो पाता है खुद को बेबस कभी।
कब क्या चाहे, कब क्या सोचे,
समझना इसको आसां तो नहीं,
शायद जितना कहता है,
उतनी ही रह जाती है अनकही।
कभी एक बोझ सा भारी,
तो कभी चंचल पवन है ये,
कही अनकही बातें सुन इसकी,
तेरा पागल मन है ये।

शुभ्रा सिन्हा
मैनेजर (आई. टी.)
बैंक ऑफ बड़ौदा

भारतीय रेल: तिरंगा, सतरंगा, रंगबिरंगा भारत

भारत देश अनेकता में एकता के विपरीत सिद्धांत को भी अपने अन्तस में समेटनेवाला देश है। रंग-रूप, वेश-भूषा, धर्म, संस्कृति, आहार, व्यवहार, रहन-सहन तथा आवश्यकताओं के मामले में इस देश में जितना अंतर या भेद है, वह शायद ही किसी देश में हो। यह इन अर्थों में भी अपने आप में सहज है कि इस देश में 562 से भी ज्यादा रियासतों का विलय हुआ है। अगर हम मानें कि हर रियासत की अपनी कोई ख़ासियत होगी तो भी शताधिक वेरायटी पर मुहर तो लग ही जाती है। विविधता में एकता का तो मालूम नहीं पर हाँ, यह देश विविधताओं का देश अवश्य है। ऐसा लगता है, जैसे किसी ने रंगबिरंगी चिड़ियों को एक ही कैनवास में उतार दिया हो या फिर हर रंग के फूलों को एक ही गुलदस्ते में समेटने की कोशिश की हो। जो देश की विविधता को थोड़ा भी जान लेता है, वह इसे प्रणाम किये बिना नहीं रह सकता।

भारतीय रेल देश का ही नहीं दुनिया के सबसे बड़े नेटवर्क में प्रथम पंक्ति में गिना जाने वाला रेल नेटवर्क है। यह विश्व के पाँच बड़े नेटवर्कों में एक है। एशिया में इसका प्रथम स्थान है। भारतीय रेल एकल प्रबंधनाधीन विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। यह 150 वर्षों से भी अधिक समय से भारत में अपनी सेवाएं दे रहा है। यह विश्व का सबसे बड़ा नियोक्ता है, इसके 16 लाख से भी अधिक कर्मचारी हैं। रेलवे अपने किराये के मामले में विश्वभर में सबसे किफायती है।

रेल देश की बहुद्देशीय योजनाओं को पूरा करनेवाली एक मात्र योजना है। ऐसा कोई व्यक्ति नही है, जिसे भारतीय रेल शरण नहीं देती हो। यह बिना छप्पर वालों के लिये रैन बसेरा बनती है, हाथ की सफाई वाले पॉकिटमारों के लिये तो यह सर्वसुविधा संपन्न स्थान है। रेलवे स्टेशन की भीड़ तो भारतीय कुम्भ मेला का छुटपुट रूप होती है या यों कहें कि बारहमासी मेलों का आयोजन भारतीय ट्रेन अपने स्टेशनों में 24x7 चौबीसों घंटे और सातों दिन आयोजित करती रहती है। यहाँ ट्रेनें बड़े-बड़े मेलों के लिये भी चलाई जाती है या फिर ट्रेनों के सहारे मेलों को चलाया जाता है। भारतीय जनसंख्या विस्फोट की विद्रूपता को समझने के लिये भारतीय ट्रेन की जनरल बोगी का कोच काफी हद तक समर्थ है। बीस-बीस घंटे का सफ़र यहाँ लोग आसानी से ट्रेन के पायदान में ही कर लेते है। आप जनरल कोच में लोगों को उठे, बैठे, खड़े, टँगे, लेटे, रोते, गाते, खाते-पीते देखा करते हैं। आदमी अपने पूरे जीवन में जिस जिस मुद्रा को अंगीकार करता है, सारी मुद्राओं में आपको आदमीनुमा लोग यहाँ दीख जायँगे ।

मुंबई की ट्रेन में ऊँघते हुये लोग जितनी दृढतापूर्वक अपनी सीट या फिर खड़े-खड़े खम्भे को पकडते हैं, वो काबिले तारीफ है। मैं तो उनके दिमाग की दाद देता हूँ, ग़ज़ब की सेटिंग है। लटके-लटके लोग ऊँघ लेंगे, खर्राटे ले लेंगे, पर बिना किसी अलार्म के ठीक उसी स्टेशन में अपनी आँख खोल भी लेते हैं, जहाँ उनका गंतव्य है। यह अद्भुत है और मानवीय मष्तिष्क के अनसुलझे रहस्यों का प्रमाण भी है, भविष्य में यह भी किसी न किसी रिसर्च का आधार बन सकता है। बेफिक्री में फ़िक्र का यह एक विरला उदाहरण है। एक बड़ा प्रश्न यह है कि आदमी ने ट्रेन के साथ एडजस्ट किया या ट्रेन ने आदमी के मष्तिष्क के साथ। इस प्रश्न का जवाब ढूंढने वाले को नोबल पुरस्कार तो मिल ही सकता है।

ट्रेन की बहुद्देशीयता के प्रमाण के लिये यही कहना काफी होगा कि जातकर्म संस्कार से लेकर अंत्येष्टि की तैयारियों तक के सभी सोलह संस्कारों में भारतीय ट्रेन ने अपनी भूमिका निभाई है। सुदूर पुर्वोत्तर में मैंने अंत्येष्टि की लकड़ियों को ट्रेन में विशेषाधिकार के साथ सफ़र कराते हुये देखा है। भारतीय ट्रेन न केवल सबसे कम दरों में सफ़र कराने वाला, सफ़र का इकलौता साधन है, अपितु यह हर रोज दस हज़ार से ज्यादा लोगों को बेटिकट सफ़र कराने का कीर्तिमान भी रच रहा है। सोने से लेकर सोने के बाद का नित्यकर्म भी भारतीय ट्रेन में शान्ति के साथ निपटाया जाता है। अगर अपनी प्रत्यक्ष (आँखन देखी)

कहूँ तो बिहार और बंगाल की ओर जानेवाली ट्रेन के अनुभव हमेशा नये होतें है, जिसे पढ़कर जाना नहीं जा सकता और खरीदकर पाया नहीं जा सकता। स्वेद में लथपथ लोग मानवीय श्रम की खुशबू का मोल जानते हैं; वे भीड़ भरी ट्रेन में भी अपना खादी का मटमैला झूला लगाकर अंतहीन सा लगने वाला लंबा सफ़र कैसे पूरा करते है, वे ही जानते हैं।

भारतीय ट्रेन का एक लतीफ़ा बड़ा प्रसिद्ध हुआ था - एक बार बिहार की एक ट्रेन पाँच मिनट पहले पहुँच गई बड़ी अफरा तफरी मची। लोगों को अपनी बर्थ में कोई और मिला, सब इधर उधर था। थोड़ी देर में घोषणा हुई कि 'यात्री गण ध्यान दें प्लेटफार्म नं एक पर खड़ी यात्री गाड़ी कल की है। आज आनेवाली ट्रेन तेरह घण्टे लेट है इसके कल बीस बजे पहुँचने की पूरी सम्भावना है।' अब यह संभावना कैसी है- यह तो आप जाने या आपका खुदा। अभी पिछले बजट में दूरंतो ट्रेन को लॉन्च किया गया है। इस ट्रेन के बारे में बताया गया कि यह दूरी का अंत करेगी इसलिए इसे बंगाली भाषा में दूरंतो कहा गया है। यह ट्रेन किसी स्टेशन में नही रुकेगी। जब यह ट्रेन चली तब पता चला कि यह ट्रेन स्टेशनों को छोडकर बाकी सब जगह रुकती है। अब यात्री बड़े परेशान हैं, जंगल झाड़ी, पहाड़, नदी, नाले सबके किनारे यह ट्रेन रुकती है, बस अपने वादे के अनुसार स्टेशन को छोडकर। अब यह देश जाने और देश के कर्णधार, कि ट्रेन के स्टेशन छोड़कर बाकी जगह रुकने से क्या वाकई दूरी या दूरी तय करने में लगने वाला समय कम होगा।

भारतीय ट्रेन ने अमीर-गरीब, अच्छे -बुरे सबका भेद मिटाया है। एक तुच्छ सा लगने वाला गरीब से गरीब आदमी भी ट्रेन में चढ़ते हुये संभ्रांत, धनी और कुलीन व्यक्ति को धकिया सकता है। हमारी ट्रेन में सफ़र करने के लिये बाहुबली होना भी बड़ा आवश्यक है। लखनवी अंदाज़ के शिष्टाचार से न तो आपको ट्रेन में चढ़ ही पायेंगें और न ही बैठने की जगह ही नसीब हो पायेगी।

आदिकाल से हमने पृथ्वी को गोल माना है- भूगोल या ब्रह्मांड कहकर उसे सम्बोधित किया है। तथाकथित पुरातनपंथी संस्कृतिवादी इसे वैज्ञानिक साबित करते हैं। मैं इसे नैतिक या आध्यात्मिक मानता हूँ। पृथ्वी को वर्तुल या गोल स्वीकारने का मकसद शुरू से शायद यही रहा होगा कि चालाकी करते समय सावधान रहो। न जाने कब चलते चलते चालाकी तुम तक पहुँच जाये। जो भी तुम करोगे वह गोल गोल चलकर आप तक वापस आ जायेगा। अच्छा तो अच्छा बुरा तो बुरा।

भारतीय जनमानस का गुस्सा तो कभी-कभी आम आदमी पार्टी के रूप में खास लोगों से विद्रोह कर बैर भी कर लेता है, पर भारतीय ट्रेन किसी से बैर नहीं करती। वह आम और खास सबको उसकी मंजिल तक पहुंचाती है। कभी-कभी लगता है कि, इसने तो धरती की सहनशीलता को भी मात दे दी है। धरती तो भूचाल के माध्यम से अपना गुस्सा कभी-कभी प्रकट भी कर देती है, किन्तु रेल निरीह जनता की तरह कभी आक्रोश नहीं प्रकट करती।

भारतीय रेल सच्चे अर्थों मे भारतीयता को परिभाषित करती है। हम सभी इसके प्रति सद्भाव रखेंगें तो यह ज्यादा टिकाऊ बनेगी। हमारी विडम्बना है कि हम सुविधाओं को भोगना तो जानते हैं, किन्तु उसकी सुरक्षा का प्रबंध करना नहीं। यह कैसा देश है, जहां देश के प्रधानमंत्री को सफाई की चिंता करनी पड़ती है। रामभरोसे रहने वाले लोग सचमुच रामभरोसे ही जीवन काटना चाहते हैं। किन्तु सच यही है कि, जीवन की समस्याओं का समाधान हमें स्वयं ही करना पड़ेगा। सरकार को जनता से सरोकार रखना सीखना होगा और जनता को अपनी ज़िम्मेदारी। तभी देश और देशवासियों की ज़िन्दगी खुशियों की पटरी पर सरपट दौड़ सकेगी।

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

सृजन शब्द - ज़िन्दगी

ज़िन्दगी में खुशी गम, आते यहाँ हरदम, कोई न किसी से कम, अहंकार त्यागिए।
होते भीड़ में अकेले, लेना कभी न झमेले, निकल जाने में भला, कही से भी भागिए।।
मिल के प्रेम से रहो, ज़िन्दगी छोटी है अहो, सुख दुख सभी सह, सजग हो जागिए।
जीवन में राग द्वेष, करना कभी न क्लेश, मेरी माटी मेरा देश, प्रेम गीत रागिए।।

सृजन- भ्रमण•

भ्रमण में रहें संत, साधु गुण हैं अनंत, खुद के कल्याण हेतु, जीवन सँवारिए।
तीरथ भ्रमण कर, छोड़ दिया घाट घर, तृष्णा मोह माया पर, कुछ तो विचारिए।।
स्वारथ का है संसार, प्रभु के चरण धार, हरि नाम नित्य जप, खुद को निहारिए।
प्रकृति सौंदर्य जहाँ, भ्रमण करना वहाँ, स्वस्थ रहें सदा आप, घर भी पधारिए।।

सृजन शब्द - अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति है स्वतंत्र, विकास का अभिमंत्र, मिले साथ सब यंत्र, जीवन सुधारिए।
अभिव्यक्ति की आजादी, करते है बरबादी, संबंधों से खिलवाड़, खुद ही विचारिए।।
अभिव्यक्ति से उत्थान, मिलता है जब मान, पूरे होते अरमान, कर्म को निहारिए।
मनमानी अभिव्यक्ति, दुर्भाव पुर्वक शक्ति, अवैधानिक है युक्ति, सत्य मत मारिए।।

किशोर कुमार नशीने
सी. एम. ओ. सी. टी.
एल. डी. सी. पी.,
भिलाई इस्पात संयंत्र

हमलोग.....

मिट्टी पानी को तरसाये गये हैं,
हमलोग गमलों में उगाये गये हैं|
मुकाम सबके हमसे होकर गुज़रे हैं,
हम लोग सबके रास्ते में पाये गये हैं|
मज़हब जात अलां फलां में बाँटा गया है हमें,
उनकी जीत के लिये हम लोग बिखराये गये हैं|
मोहब्बत मुकद्दर में नहीं है हमारे क्या करें,
हम लोगों के हाथ ही ऐसे बनाये गये हैं|
जीना भी नहीं चाहते और मरने से डरते हैं हम लोग,
परवरिश ही ऐसी है, हमलोग कितना डराये गये हैं|
सभ्यता संस्कृति की जड़ें काटी गई हैं हमारी,
हमलोग इस तरह बोनसाई बनाये गये हैं|

ओमवीर करन
सीनियर ओ.सी.टी.
कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

बच्चों में राष्ट्रभक्ति बो रहा है तिरंगा

शहीदों की शहदत पे लिपट के रो रहा है तिरंगा,
कुछ को ग़लतफ़हमी है कि सो रहा है तिरंगा|
राष्ट्रगान के साथ तिरंगा फहरता देखो तुम,
जानोगे बच्चों में राष्ट्रभक्ति बो रहा है तिरंगा|
उत्साह सादगी खुशहाली निरंतरता से बना ये,
सामंजस्य बिठाके दुनियाँ का हो रहा है तिरंगा|
तरक्की के पथ पर देश थामे चल रहा है तिरंगा,
देश की बुराइयों को धीरे-धीरे खो रहा है तिरंगा|
मैंने तो आज़माया तुम भी आज़मा के देखना,
मन का सबल, मन का बल क्यों रहा है तिरंगा|
इसके लिये सम्मान आदर अंदर से आ रहा है,
अब जन-जन का घर-घर का हो रहा है तिरंगा|

बच्चों में राष्ट्र भक्ति बो रहा है तिरंगा

एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) में भारतीय भाषाएँ

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस टेक्नोलॉजी में भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर के विभिन्न संगठन तथा कंपनियाँ अलग-अलग भाषाओं को स्थानीय स्तर तक पहुँचने हेतु अवसर प्रदान कर रहीं हैं। हालांकि, इन अवसरों के साथ-साथ कई चुनौतियाँ भी हैं। अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है| फिर भी, इंटरनेट पर उपलब्ध कंटेंट में इसका हिस्सा सिर्फ 0.1% है। भारत के लिए अपना जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस मॉडल बनाने में यह पहली बाधा है। इन मॉडल्स की ट्रेनिंग के लिए काफी डेटा लगता है। हिंदी देश के आधे से कम हिस्से में बोली जाती है। 60 अन्य भाषाएँ बोलने वाले कम से कम एक लाख लोग हैं। भारत में गूगल की एआई कंपनी डीपमाइंड के अनुसार कुछ भाषाओं के लिए ऑनलाइन डेटा उपलब्ध नहीं है। इस कमी को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत सरकार, कुछ अलाभकारी संगठन, नई कंपनियां और ग्लोबल टेक कंपनियाँ टेक्नोलॉजी को देश की ज़रूरतों के अनुरूप ढालने के अभियान में जुटे हैं। इन प्रयासों की कामयाबी पर भारत की तरक्की निर्भर करेगी। भारत के प्रयास अन्य विकासशील देशों के लिए सबक होंगे। ऐसी टेक्नोलॉजी की असली कीमत जनता के जीवन में फर्क पैदा करने की स्थिति पर टिकी है।

एआई में भारतीय भाषाओं की चुनौतियों और अवसरों को समझने की प्रक्रिया:-

एआई का कच्चा माल डेटा है। स्टोर में कच्चे माल की कमी के कारण भारत को अपना जरूरी सामान खुद बनाना है। आईआईटी चेन्नई की रिसर्च लैब एआई 4 भारत ने 22 भाषाओं में वॉइस रिकॉर्डिंग जमा करने के लिए देश भर में लोगों को भेजा है। गूगल भी ऐसा ही कर रही है। ये दोनों भारतीय भाषाओं के अनुवाद का सिस्टम बनाने के सरकारी प्रोजेक्ट भाषिणी को डेटा दे रहे हैं।

एआई टेक्नोलॉजी से भारत और अन्य विकासशील देशों में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर योजनाएँ चलाने में मदद मिलेगी। भारत ने आइडेंटिटी सिस्टम, डिजिटल पेमेंट्स, डेटा मैनेजमेंट और ओपन प्रोटोकॉल्स कम लागत में बनाए हैं। भारत की विशेषज्ञता से मौजूदा कैटेगरी से ज्यादा कैटेगरी में एआई कंपनियाँ बनाई जा सकेंगी। भारतीय टेक विशेषज्ञ यदि कम खर्च में एआई सिस्टम चलाने और ट्रेन करने में सफल रहे तो इससे विकासशील देशों को भी फायदा होगा. भारत अगर एआई मॉडल्स के लिए जरूरी साधन और सामान जुटाने में सफल रहा, तब भी उसे रिसर्चर्स की कमी नहीं हो सकती है। बेंगलुरु के थिंक टैंक तक्षशिला के अनुसार दुनिया के 8% टॉप एआई शोधकर्ता भारत के हैं। लेकिन, इनमें से एक भी भारत में काम नहीं करता है, सभी विदेशों में हैं।

भारत में नए एआई मॉडल्स पर काम:-

भारत में चैटबॉट बनाने के लिए मेटा के लामा जैसे ओपन सोर्स मॉडल को मुख्य आधार के तौर पर इस्तेमाल करने के आइडिया पर काम चल रहा है। हलाँकि, उसमें स्थानीय जरूरतों के हिसाब से कुछ बदलाव जरूर किए जाएंगे। उदाहरण के लिए बेंगलुरु में एआई स्टार्टअप सर्वम एआई यह काम कर रही है।

चैटबॉट बनाने के लिए एआई कंप्यूटर चिप्स पर निर्भर है। इनकी दुनियाभर में कमी है। इस साल भारत सरकार ने 50 अरब रूपए के बजट से दस हजार चिप्स खरीदने की घोषणा की है। भारतीय इनोवेटर भी अन्य किस्म की चिप्स पर काम कर रहे हैं।

भारत के एआई मॉडल अमेरिका-चीन से अलग होंगे। पश्चिमी देशों में इसका सबसे प्रमुख प्रोडक्ट चैटबॉट्स हैं। भारतीय इंटरनेट का इस्तेमाल ऑडियोविजुअल रूप में अधिक करते हैं, इसलिए भारतीय एआई प्रोडक्ट्स वॉयस आधारित होंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भारतीय भाषाओं का उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है| कई क्षेत्र हैं जहां इसका योगदान महत्वपूर्ण है:-

- भाषा अनुवाद: मशीन ट्रांसलेशन सिस्टम, जैसे कि गूगल ट्रांसलेट, अब हिंदी, तमिल, बांग्ला आदि भारतीय भाषाओं को बेहतर तरीके से समझते और अनुवाद करते हैं।
- स्पीच रिकग्निशन: भारतीय भाषाओं के लिए स्पीच टू टेक्स्ट तकनीक विकसित की जा रही है, जिससे लोग अपनी मातृभाषा में आवाज के जरिए जानकारी दे सकते हैं।
- चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट: कई कंपनियाँ अपने ग्राहक सेवा चैटबॉट्स को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करा रही हैं, जिससे स्थानीय उपयोगकर्ताओं को बेहतर अनुभव मिलता है।
- शिक्षा और प्रशिक्षण: एआई का उपयोग स्थानीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री तैयार करने के लिए किया जा रहा है, जिससे अधिक लोग तकनीकी शिक्षा का लाभ उठा सकें।
- कंटेंट जनरेशन: भारतीय भाषाओं में लेख, कहानियाँ और अन्य सामग्री जनरेट करने के लिए एआई टूल्स का उपयोग बढ़ रहा है।

इस तरह, एआई भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने और डिजिटल समावेशन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

नितिन वासनिक
राजभाषा अधिकारी
क्षे. का., रायपुर, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

हिंदी का सम्मान

अगर कविता लिख पाया तो, हिंदी का सम्मान लिखूंगा ..
युग तुलसी, सूर, कबीरा, मीरा और रसखान लिखूंगा।
अगर कविता .....

महाकवि केशव की भाषा, विद्यापति महान लिखूंगा
भूषण की ओजस वाणी, पंत, प्रसाद महाप्राण लिखूंगा।
अगर कविता .....

प्रेमचंद सी मिट्टी वाला, मुक्तिबोध सा मतवाला, ...
जिसमें हो बच्चन की मधुशाला, या कि हलाहल प्याला
दिनकर की चैतन्य संजोए, सुभद्रा, महादेवी की शान लिखूंगा
अगर कविता ....

अज्ञेय की असाध्य वीणा, भारतेंदु, द्विवेदी का अभिमान लिखूंगा।
मोहन की बुनियादी बातें, गुरुदेव की गीतांजलि सी,
आज़ादी का अलख जगायी जिसने, उसका मैं सम्मान लिखूंगा।
यदि कविता ..हिन्दुस्तान का मैं अमिट सम्मान लिखूंगा
अगर कविता ..

इन सब की वाणी को लेकर, फिर अपना हिन्दुस्तान लिखूंगा ॥
यदि कविता लिख पाया तो, हिंदी का सम्मान लिखूंगा ....
किस किस का मैं नाम लिखूँ...
हिंदी के हर एक बेटे का मैं अभिमान लिखूंगा
हिन्दुस्तान का मैं अमिट सम्मान लिखूंगा

पुरुषोत्तम साहू
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

अन्वेषक की नौकरी

ज़िन्दगी के सफ़र में जा रहा था,
बेरोज़गारी गीत गा रहा था।
सहसा एस.एस.सी.को ख्याल आया,
मुझे अन्वेषक बनाया॥
यह भी अजीब नौकरी है ,
बरसात की छतरी है।
कभी यहाँ, तो कभी वहाँ ,
कभी ऑफ़िस तो कभी टूर में,
कभी निकट तो कभी दूर में।
कभी धूप तो कभी छॉव में
कभी शहर तो कभी गॉव में।
अन्वेषण करके लाता हूँ ,
माथा पच्ची कराता हूँ।
नम्रता से पूछता हूँ ,
सीधा ग्राहक ढूंढ़ता हूँ।
लोग घबराते हैं,
बताना तो छोड़ो, दो-चार बातें सुनाते हैं।
औरौं की बात तो दूर, जब अपने साहब निरीक्षण में आते हैं,
तो कभी लिस्टिंग तो, कभी कोडिंग में गलती बताते हैं।
क्या कहूँ सही-सही बता रहा हूँ,
जीवन का कटु अनुभव सुना रहा हूँ।
होटल में खाता हूँ, लॉज में सोता हूँ,
कभी सिसकता, तो कभी रात भर रोता हूँ।
क्योंकि जवाबदारी से लदा हूँ,
और अपनों से जुदा हूँ।
होटल का वो खाना, जिसमें न माँ की ममता होती,
न बहन का स्नेह होता, न पत्नी का प्यार।
होता है तो बस ग्राहक और दुकानदार के बीच,
औपचारिक संबंध, जो चंद सिक्कों पर आधारित होता है।
काश ! अपने जीवन का सर्वे किया होता,
तो ज़िन्दगी को आड़े हाथों लिया होता।
पत्नी बच्चों के साथ खुशहाल होता,
घर से ऑफिस और ऑफिस से घर होता।
पर, परिस्थितियों ने यहाँ लाया,
भाग्य पर प्रश्नचिन्ह लगाया।
क्या कहें ? किस्मत का खेल है,
यहाँ कोई पैसेंजर ,तो कोई मेल है।
इस नौकरी से पत्नी भी चिढ़ती है,
कुछ कहो तो लड़ाई में भिड़ती है।
कहती है-
देखो जी, आप हमेशा टूर में रहते हो,
अपने मस्तियों में ही चूर रहते हो।
अपने भविष्य को वर्तमान में ही सोचती हूँ,
पहले तो सपने सॅजोया करती थी,
अब तो सिर्फ विरह को ही बटोरती हूँ।
मैंने कहा-भगवान ये क्या नौबत आई है ?
एक ओर नौकरी तो दूसरी ओर पत्नी ने रंग लाई है।
कुछ कर लो 'पंचराम' तभी बन पाओगे ,
नहीं तो सर्वे करके भी पछताओगे।
बड़ी उम्मीद के साथ नौकरी कर रहा हूँ,
कि इस मरु भूमि में भी हरियाली होगी,
अपने जीवन में भी खुशहाली होगी।
उज्जवल आकाश होगा,
इस जीवन में भी प्रकाश होगा।
सूरज न सही, आत्मज्वलन ही सही ,
दीपक की भांति जल रहा हूँ।

पी. आर. साहू
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी,
दुर्ग

//लघु कथाएँ//

एक चिड़िया

प्रेम की लकीरे इतनी रंग बिरंगी सुनहरी दिखाई देने लगीं, कि बिन्नी और रमेश उसमे खोते ही चले गए थे। परंतु जब दाम्पत्य की गहरे रंगों से भरी दीवारों से उनका सामना हुआ तो रंगबिरंगी इंद्रधनुष की घटाएँ वैसे ही लुप्त होती चली गईं, जैसे सूरज की तपन अपने ही इंद्रधनुषी रंगों को उड़ा देती है।

बहुत सी कोशिशों के बाद भी आज उनकी आखरी पेशी का दिन था। आज काग़ज़ के पन्नों पर उनका अलगाव होना था।

साथ ही 2 वर्षीय मासूम का भी फैसला होना था। दंभ, अहंकार और अविश्वास की तेज़ रोशनी में रमेश को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने हस्ताक्षर किए ही थे, कि कमरे में सन्नाटा छा गया। एक गौरैया अपने बच्चे के साथ उड़ते हुए पंखे से टकरा गई।

सब ने दया दृष्टि उस पर डाली और राहत की साँस ली, कि वह ज़िन्दा है, पर वह निर्जीव सी लटकी गोरैया सभी की दया की पात्र तो थी। पर उसे ही हौसला रख कर अपने बच्चे के साथ वापस उड़ने की कोशिश करना था। बिन्नी ने हस्ताक्षर किए और बच्चे के साथ तेज़ी से बाहर निकल गई।

अवसर

बधाई हो...! हार्दिक बधाइयाँ...! हमें तुम पर गर्व है...! जैसे शब्दों से दीप्ति का पूरा शहर गूँज रहा था, पर वह शांत भाव से अपने हँसते मुस्कुराते परिचितों के साथ बैठी हुई थी।

उसे अपने समय के सारे काले बिंदु याद आ रहे थे। जो उसने अपमान हताशा तंगहाली और असफलता के दौरान गुज़ारे थे। भरी सभा में प्रशासनिक सेवा में चयन के लिये उसे सम्मानित किया गया।

उसने सबके सामने यही कहा "हम लड़कियों को आगे बढ़ने का अवसर दे रहे हो, अच्छा है, पर अच्छा सामाजिक वातावरण भी बनाये रखो।" समय के काले सागर में डूब चुकी उसकी कई प्रतिभाशाली सखियाँ नम आँखों से ज़ोरदार तालियाँ बजाने लगीं।

अकाल मृत्यु

सूची हाथ में आते ही यमराज जी सीधे चित्रगुप्तजी के पास दौड़ पड़े। "प्रभु इन लोगों की अकाल मृत्यु का फरमान जारी कर दीजिए" बड़ी कृपा होगी। जन्म मरण तो पहले से ही लिखा जा चुका है, यमराज जी फिर आप उसे क्यों परिवर्तित करना चाहते है।

प्रभु : - "पृथ्वीलोक में कोरोना महामारी फैली हुई है, सम्पूर्ण मृत्युलोक त्राहि - त्राहि करने वाला है और ये लोग कोरोना गाइडलाइन का अनुपालन नहीं कर रहे हैं, अपने साथ ही साथ सैकड़ों लोगों को संक्रमित कर रहे हैं।" गंभीरता से अध्ययन करने के बाद चित्रगुप्त जी बोले "अंतिम चेतावनी जारी कर दी जाती है : अब जो अकारण बाहर निकले या जानते बूझते नियमों की अहवेलना करे उसे तत्काल प्रभाव से आप उठा लाएँ।" आदेश हाथ में आते ही यमराज जी पृथ्वी लोक की और रवाना हो चुके हैं। सावधान...! पृथ्वीवासियों, विपन्न तिथियाँ हवाओं में फैल चुकी है।

पागल

"हाँ तो बच्चों कल संडे को क्या पसंद का बनाया जाए।" "डोसा" मम्मी। यह कहते हुए बच्चे अंशुल और आर्ची अपनी माँ से लिपट गए। पर मेरे ज़ेहन में तो सुष्मिता मैडम का ख्याल कई दिनों से चल रहा था।

क्या खुशकिस्मत है बॉस भी...! कमाऊ खूबसूरत पत्नी और सभी कुछ कितना खूबसूरत नज़र आता है, और यहाँ यह मेरी पत्नी पढ़ी-लिखी खूबसूरत है, पर घर- परिवार को संभाल के रखने का पागलपन।

हाँ...! पागल ही तो है, जो अच्छी-ख़ासी नौकरी को छोड़ कर घर परिवार को जीवन मान बैठी है। पहले छोटे भाई-बहनों, माँ-पिताजी की ज़िम्मेदारी थी, तो मैंने कुछ नहीं कहा, पर अब बच्चों के नाम पर घर में बैठी है। सच में इसके पागलपन ने मुझे कई सालों से परेशान कर रखा है।

खैर, जाने दो सभी की किस्मत वर्मा जी की तरह तो है नहीं, कि पत्नी खूबसूरत भी हो और कमाऊ भी।

मैंने देखा, कैसे कटोरी से नाप कर दाल-चावल गलाने में व्यस्त है। खैर मुझे फिर सुष्मिता मैडम का ख़याल आने लगा। सदैव हँसती-मुस्कुराती, पेड़ों में पानी देती या फोन पर बतियाती। कल तो बॉस के घर फ़ाइल देने जाना है। हफ़्ते भर से छुट्टी पर है, तबीयत के बहाने फिर मैडम से मुलाक़ात हो ही जाएगी। सोचते-सोचते नींद आ गई।

सुबह आराम से उठकर मुस्कुरा कर तैयार हुआ। देखा डाइनिंग टेबल पर गरमा-गरम सभी कुछ तैयार है, खुशी दुगनी हो गई। फिर गाड़ी लेकर फुर्र से उड़ गया बॉस के दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें आ रही थीं।

सुष्मिता "देखो रोहन की तबीयत कब से ख़राब है, आज कुक भी नहीं आया, मुझे भी अच्छा नहीं लग रहा है, मूंग दाल की खिचड़ी बना दो" फिर चली जाना।

देखो अमित तुम ऑनलाइन कुछ मंगा लो, मैं वैसे भी बहुत लेट हो चुकी हूँ।

"क्लब की मीटिंग में आज नहीं जाओगी तो आसमान तो नहीं गिर पड़ेगा...?" अमित चीख़ पड़ा।

आवाज़ नीचे करके बात करो अमित मुझे उन पागल महिलाओं की तरह तो समझो मत जो सिर्फ रोटी पकाने को ही ज़िन्दगी समझती हैं। मेरी अपनी पर्सनल लाइफ़ है। मैं तो रोहन को भी निधि की तरह हॉस्टल में डालना चाहती थी पर तुम नहीं माने, तो भुगतो अब।

सुष्मिता, वह सिर्फ 8 साल का है, डे बोर्डिंग स्कूल में तो जा ही रहा है ना। थोड़ा बड़ा होगा तो चला ही जाएगा।

अमित - "मेरी कॉल आ रही है, अब फालतू मेरा टाइम खराब मत करो, ऑनलाइन कुछ आर्डर कर दो... बाय।" कहते हुए वह तेज़ी से निकली। दरवाजे की आहट पाते ही मैंने अपने आप को छुपा लिया, पर उसके कहे शब्दों ने मेरे दिल का आवरण भेद दिया।

"मैं उन पागल महिलाओं की तरह नहीं हूँ, जो सिर्फ रोटी पकाने को ही जीवन समझती हैं।"

मेरी पत्नी के पागलपन पर मुझे बहुत प्यार आ गया, उसका पागलपन सच में कितने सुकून से मेरे घर को संभाले हुआ है।

रश्मि अमितेष पुरोहित
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

बिन उनवान ज़िन्दगी

ऐ ज़िन्दगी ,
गीत लिखे जो अक़ीदत में तेरे,
संगीत रचे जो इबादत में तेरे,
धुन कोई अनजान सुना दो,
ऐ ज़िन्दगी,
अब तुम्हीं कोई उनवान सूझा दो|
खामोशियों में डूबी,
आवाज़ें अनकही हैं,
छाई एक उदासी,
जीवन में हर कहीं हैं,
जोश एक नया जगा दो,
ऐ ज़िन्दगी,
अब तुम्हीं, कोई उनवान सूझा दो।
तस्वीर उकेरी, जो ख़िदमत में तेरे,
रंगों से तुम्हीं कोई, पहचान करा दो,
और तो कोई राह सूझे नहीं,
एक चिराग़ जलाकर,
तुम ही रहगुज़र सूझा दो।
ऐ ज़िन्दगी ,
अब तुम्हीं कोई उनवान सूझा दो,
ऐ ज़िन्दगी ,
तुझसे अब कोई सवाल नहीं,
तेरे बख्शी रहमतों,
जहमतों पर कोई मलाल नहीं,
बस जीने को सीने में एक,
अरमान जगा दो,
ऐ ज़िन्दगी ,
अब तुम्हीं कोई उनवान सूझा दो|
ऐ ज़िन्दगी ,
अब तुम्हीं कोई उनवान सूझा दो।

ज़िन्दगी

इतना मुश्किल भी नहीं,
ज़िन्दगी की हर चुनौती से,
आँख मिलाकर लड़ लेना,
गमों की आँधियों के बीच,
खिल-खिलाकर हँस लेना,
इतना मुश्किल भी नहीं,
दुनियाँ में रोज़ी-रोटी के बीच,
कुछ पल फ़र्सत के चुरा,
अपने शौक ज़िन्दा रख लेना|
ज़िन्दगी तो एक ही मिलती है,
इतना मुश्किल भी नहीं,
एक ज़िन्दगी में कई ज़िन्दगी जी लेना
एक ज़िन्दगी में कई ज़िन्दगी जी लेना।

सीता वियोग

एक उम्र बीती कानन में,
एक उम्र बीती भटकन में,
एक उम्र बीती अश्रु संग,
प्रिय वियोग के विरहन में,
तब ये जाना सिय ने कि,
कंचन मृग नहीं होते।
एक उम्र बीती आराधन में,
एक उम्र बीती निबंधन में,
एक उम्र बीती प्रतिक्षण,
प्रिय के मधुर स्पंदन में,
तब ये जाना सिय ने कि,
कंचन मृग नहीं होते।
एक उम्र लिखी थी,
पुत्रों के स्नेह सिंचन की,
एक उम्र लिखी थी,
ऋषियों के स्तवन की,
तब ही न जाना सिय ने कि,
कंचन मृग नहीं होते|
एक उम्र लिखी थी,
आमरण वियोगन की,
विधि के विधानन में,
एक उम्र लिखी थी,
चिरंतन प्रिय स्मरण की,
विधि के विधानन में,
तब ही न जाना सिय ने कि,
कंचन मृग नहीं होते,
तब ही न जाना सिय ने कि,
कंचन मृग नहीं होते।

नितिन गोस्वामी
सहायक अधीक्षक
डाक विभाग

//समय का अभाव//

जगद्गुरु शंकराचार्य ज्ञान की जटिल व सूक्ष्म बातों को जितनी सरलता से समझते थे, उतनी ही आसानी से वे व्यवहारिक जीवन में काम आने वाले सूत्रों की व्याख्या भी कर देते थे। लोग उनके पास दूर-दूर से आते थे और वे लोगों को अनमोल ज्ञान की ऐसी पूँजी देते, जो लोगों के लिए संपूर्ण जीवन का आधार हो जाती।

एक बार एक धनवान श्रद्धालु व्यापारी शंकराचार्य जी के पास आया और कहने लगा ,"प्रभु मेरे पास कई कामों के लिए समय ही नहीं रहता। मैं सोचता ही रह जाता हूँ कि फलाँ सद्कार्य करूँ, अमुक अच्छा कार्य भी करना है, किंतु समय न होने से नहीं कर पाता। मुझे अपने व्यापार के कामों से ही फ़ुरसत नहीं मिलती। आप ही बताइए कि समय अभाव के कारण कोई व्यक्ति सद्कार्य न कर पाए तो वह क्या करे?

शंकराचार्य जी ने मुस्कुराते हुए कहा - वत्स मेरा परिचय तो आज तक उस व्यक्ति से नहीं हो पाया है, जिसको विधाता के बनाए समय में से एक क्षण भी कम मिला हो। वस्तुतः जिसे तुम समय अभाव कह रहे हो, वह अव्यवस्थित जीवन जीने का ढंग है। जो लोग व्यवस्थित जीवन नहीं जीते, वे अपने अमूल्य जीवन को भार स्वरूप ढोते हैं। जीवन यह नहीं कि, कितने वर्ष जिया। जीवन वह है, कि व्यक्ति ने समय का कितना सदुपयोग किया। सार यह है, कि कार्यों का समयानुसार विभाजन कर प्रत्येक कार्य को उसके तय समय पर किया जाए तो समयाभाव जैसी स्थिति कभी निर्मित ही नहीं होगी और विकास के स्तर पर भी इसके अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

विजय सिंह ठाकुर
कनीय प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट
भिलाई

वीरेन्द्र कुमार ओगले, महाप्रबंधक (एल. डी. सी. पी.)
भि.इ.सं.

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 59 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 59 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 59 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास, भिलाई-दुर्ग की 59 वीं छमाही बैठक एवं वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

मेरा संयंत्र - मेरा शहर

आज भिलाई रात-दिन, ढाल रहा इस्पात।
मित्र रूस की ओर से, है अनुपम सौगात।।

अविरल भट्ठी में सदा, धधक रही है आग।
मैत्री भारत - रूस की, साक्षी मैत्री बाग।।

बिछीं पटरियाँ रेल की, दुनियाँ भर में आज।
सेल - भिलाई है बना, रेलों का सरताज।।

सेल - भिलाई में बने, प्लेट विभिन्न प्रकार।
पनडुब्बी -पुल -पोत सब, लेते हैं आकार।।

युद्धपोत विक्रांत का, बनता अंग विशेष।
सेना में उपयोग से, रक्षित होता देश।।

चन्द्रयान में भी लगे, अति विशिष्ट इस्पात।
देश आत्मनिर्भर हुआ, अल्प हुआ आयात।।

इसरो - सेना की सभी, पूरी करते मांग।
अंतरिक्ष के क्षेत्र में, भारत भरे छलांग।।

फैली सारे विश्व में, कोरोना विकराल।
ऑक्सीजन की टंकियाँ, पूर्ति किए तत्काल।।

लोककला उत्थान पर, करते नियमित गौर।
संस्कृति सेहत खेल अरु, शिक्षा में सिरमौर।।

यह उद्यानों का शहर, हरीतिमा सर्वत्र।
गली - गली में स्वच्छता, मिले नहीं अन्यत्र।।

अनेकता में एकता, सुखद रम्य परिवेश।
मानचित्र में देश के, मेरा शहर विशेष।।

छोटी-सी चूक

पापा एक दिन गए काम पर, बहुत दिनों तक घर न आए,
पर वो जब घर वापस आए, हँसता - चेहरा था मुरझाए।

माँ से मुन्नी करे सवाल, क्यों पापा का है ये हाल?
खोये - खोये से रहते हैं, बदली - बदली सी है चाल।

पापा क्यों बचते हैं मुझसे ? क्यों अब रखते दूरी हैं?
क्यों अब मुझसे प्यार न करते ? क्या उनकी मज़बूरी है?

सुनकर नन्हीं की बातें, माँ की आँखें छलक पड़ीं,
कोशिश की पर रोक न पाई, और जोर से फफक पड़ी।

(माँ बोली - -)
बेटी तू जो सोच रही है, ऐसी कोई बात नहीं है,
आसमान में तुझे उछालें, पापा के वो हाथ नहीं है।

छोटी - सी एक चूक की, बड़ी सजा वो पाए हैं,
काम करते एक दुर्घटना में, अपने हाथ गँवाए हैं।

भागवत राम निषाद
मास्टर ऑपरेटर
फाउण्ड्री एवं पैटर्न शॉप
भिलाई इस्पात संयंत्र

एनपीए का बैंक के तुलनपत्र पर प्रभाव

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उसकी बैंकिंग पद्धति पर निर्भर करती है. देश की अर्थव्यवस्था का विकास बैंकिंग उद्योग के विकास के साथ जुड़ा हुआ है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो समाज के सभी कार्यकलाप बैंकिंग उद्योग से जुड़े हुए हैं। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए बैंकिंग पद्धति को मजबूत करके ही हम आगे बढ सकते हैं, अन्यथा इसकी प्रकृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती, बैंकिंग वह प्रक्रिया है, जिसमें आम जनता से मांग किए जाने पर भुगतान योग्य जमा राशि इस आशय से संग्रहित की जाती है कि इसका उपयोग ऋण या निवेश में किया जा सके, बैंक की जमा राशि उन क्षेत्रों तथा ग्राहकों से संग्रहित की जाती है जिनके पास अपनी जरूरत से अधिक या भविष्य में उपयोग करने हेतु धन होता है तथा इन धन राशियों का ऋण के रूप में धनाभाव के क्षेत्रों एवं जरूरतमंद व्यक्तियों तथा नए उद्योग, व्यवसाय आदि में उपयोग किया जाता है, इस तरह बैंक के तुलनपत्र में ग्राहकों से संग्रहित किया गया धन देयता है, जिसका उनके द्वारा मांग किए जाने पर ब्याज सहित भुगतान किया जाता है, उन राशियों का उपयोग ऋण एवं निवेश करने में किया जाता है, जो तुलनपत्र की आस्तियों का सबसे बड़ा भाग है, सबसे पहले बैंक एक उधारकर्ता है, उसके बाद ऋणप्रदानकर्ता, बैंक को जमाकर्ता द्वारा जमा किया गया मूलधन एवं इस पर देय ब्याज का भुगतान उनके द्वारा कहीं भी कभी भी मांग किए जाने पर किया जाता है| भुगतान में किसी प्रकार की देर कल्पना के परे है, इस प्रकार बैंक को ऋण प्रदान करते समय, अपने जमाकर्ता के हित को ध्यान में रखकर निर्णय लेना चाहिए, ताकि गुणवत्ता युक्त आस्तियों का निर्माण हो सके और मजबूत परियोजनाओं के फलस्वरूप रोजगार का सृजन हो सके एवं आय का स्रोत निरंतर बना रहे।

बैंक आज ऋणप्रदायी संस्था का पर्याय बन चुका है, ऋण निवेश संस्कृति को जन्म देता है तथा प्रवर्तक नए एवं बड़ी परियोजनाओं के निर्माण हेतु प्रलोभित एवं उत्प्रेरित होते हैं, इस प्रकार नई परियोजनाओं में निवेश कर न केवल परिसंपत्ति का सृजन बल्कि रोज़गार के अवसर, प्रति व्यक्ति आय, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि तथा स्वस्थ, सुंदर एवं अनुशासित समाज का निर्माण होता है, स्वस्थ एवं मज़बूत अर्थव्यवस्था हेतु आज देश में अच्छी ऋण संस्कृति को विकसित करने की आवश्यकता है, ऋण बैंक की आस्तियों का सबसे बड़ा भाग है एवं बैंक की लाभप्रदता पूर्ण रूप से इसी पर निर्भर है, जो कि आय का सबसे बड़ा स्रोत है|

बैंकों के लिए आस्तियों की गुणवत्ता को बनाए रखना महत्वपूर्ण है| किश्तों के भुगतान के आधार पर आस्तिययाँ दो प्रकार की होती है - अर्जक या मानक आस्ति तथा अनर्जक आस्ति, जिन ऋण खातों में निर्धारित किश्त एवं ब्याज का तय समय आज का समय सीमा के अंदर ग्राहक के द्वारा भुगतान किया जाता है, उसे मानक आस्ति कहते हैं एवं इन खातों से ब्याज के रूप में बैंक आय का उपार्जन करता है, जिन खातों में निर्धारित किस्त एवं ब्याज के भुगतान में 90 दिनों से अधिक की देर होती है, उन्हें अनर्जक हस्तियों में वर्गीकृत कर दिया जाता है तथा इन खातों से ब्याज के रूप में मिलने वाले आय का प्राप्त होना बंद हो जाता है|,इतना ही नहीं, इन खातों की शेष बकाया राशि पर बैंकों द्वारा अपने खातों से प्रावधान करना पड़ता है, जिससे न केवल बैंकों का धन अवरुद्ध हो जाता है, बल्कि इनकी लाभप्रदता पर प्रतिकूल असर पड़ता है, इस प्रकार अनर्जक आस्तियां दुधारी तलवार की तरह काम करती है,

अनर्जक आस्तियाँ देश की अर्थव्यवस्था के विकास की सबसे बड़ी बाधक हैं| समाज का प्रत्येक व्यक्ति इसके दुष्परिणाम का शिकार है| इससे बैंक, अर्थव्यवस्था, उधारकर्ता, जमाकर्ता, बैंक तथा प्रवर्तक के यहां कार्यरत कर्मचारी एवं आम जनता आदि सभी उसके शिकार है।

तुलनपत्र किसी भी संस्था की तस्वीर एवं आईने की तरह है, जिससे उनकी नबज़ को जाना जा सकता है, अनर्जक आस्तियों का स्तर बैंक की मज़बूती का विश्वास का प्रतीक है इनका स्तर बैंकों के कार्य-निष्पादन को दर्शाता है तथा इसका प्रत्यक्ष प्रभाव तुलन पत्र पर पड़ता है|

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में एनपीए का प्रभाव बैंकिंग की सबसे महत्वपूर्ण एवं विकट समस्याओं में से एक है, एनपीए स्तर का बढ़ना बैंकों के तुलनपत्र के प्रत्येक खंड को कुप्रभावित करता है, जिसका परिणाम भयावह हो सकता है, ऋण पोर्टफोलियो का विस्तार एवं लाभप्रदत्ता बनाए रखते हुए एनपीए का प्रभावी रूप से प्रबंधन करना आज बैंकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, परिसंपत्ति की गुणवत्ता बनाए रखना हमेशा की तरह बैंकों का एक प्रमुख कार्य है एवं यह बैंकों के लिए आज की अत्यंत गतिशील वातावरण में सबसे बड़ी चुनौती है|

आस्ति गुणवत्ता यद्यपि बैंक विशेष के लिए तुलनपत्र को ही नहीं प्रभावित करती, बल्कि बैंक की समस्त गतिविधि एवं व्यवसाय को भी प्रभावित करती है, देश की अर्थव्यवस्था पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ता है, इससे संबंधित जोखिम पर काबू पाने के लिए बैंकों को सुनियोजित एवं प्रभावी निगरानी पद्धति अपनाने की आवश्यकता है, कहा भी गया है - **"इलाज से परहेज बेहतर है"**, ऋण स्वीकृति एवं आस्ति सृजन करते समय बैंक को चाहिए कि यथोचित परिश्रम कर परियोजनाओं तथा उधारकर्ताओं का चुनाव करें, ताकि आस्तियाँ जीवनपर्यन्त सक्षम बनी रहे, जिससे न केवल बैंक, बल्कि परियोजनाओं से जुड़े हर व्यक्ति, समाज एवं देश को लाभ मिलता रहे|

नरेंद्र पाटिल
विशिष्ट ग्राहक सेवा प्रतिनिधि
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सुपेला, भिलाई

ख़ामोश लफ़्ज़

कुछ लफ़्ज़ उलझे से, कसमसाये तनते।
बनते बिगड़ते, अपनो में मिलते।
बिछड़ते सकुचाए से।

कुछ ताने बुनते, बेख्याली में।
कभी गुनगुनाते से, कभी ख़ामोश हो।
तन्हाइयों को अपनाते से।

होठों से गिरते लफ्ज़, दिलों में उतरते से।
कभी कुछ न कहते हुए भी, ख़ामोश हो।
ठहरे अफसानों को फिर बयाँ करते से।

क्यों सुलझते नहीं लफ़्ज़, कह देते सारी बातें।
अनसुलझे से रुकते झिझकते, क्यों ख़ामोश हो जाते हैं।
कुछ लफ़्ज़ उलझे से।

क्यों सुलझते नहीं लफ़्ज़।
कह देते सारी बातें।
अनसुलझे से रुकते झिझकते।
क्यों ख़ामोश हो जाते हैं।
कुछ लफ़्ज़ उलझे से।

डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'
सेल-सीईटी, भिलाई

सपनों को आकार दें !!!!

मानव को मानव बनाएँ,
प्रेस भाव सब में फैलाएँ।
धर्म पंथ का भेद मिटाएँ,
ऊँच नीच की बातें छोड़ें।
दुर्बल काया से मुँह न मोड़ें,
सबको सम संसार दें,
सपनों को आकर दें।
मिली आज़ादी दुर्बल काया,
बाँट दो गए भेद बढ़ाया,
पिछड़ेपन का घुन लिपटा हुआ,
अशिक्षा का दीपक लगा मिला,
एकता कई हिस्सों में बंटा,
जीने भर को मुँह खोलता,
देश को सँवार दें
सपनों को आकार दें।
नई दिशा की नई दशा की,
पग प्रगति का अब फिर लाएँ
सबको जोड़ता भेद तोड़ता,
एकता का मंत्र सिखाएँ।
भेद मिटाएँ सबका सबसे,
एक देश पहचान बनाएँ,
राज्य की सीमा से उठकर
एकता का मल्हार दें
सपनों को आकार दें।
बदले युग की बदली वाणी,
व्यर्थ न हो जाए नई जवानी,
दिखाने की मोह माया में,
मर न जाए उनका पानी
पश्चिम की चकाचौंध में,
सीखे अपनी संस्कृति अपनाना,
सभ्यता से सीख लेकर,
हर मनुज को प्यार दें,
सपनों को आकार दें|

टकेश्वर कुमार
टी. जी. टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

प्रौद्योगिकी की अनुपम गाथा

नव युग का आया संदेश,
तकनीक ने बढ़ाया कलेश।
संचार में दी नई दिशा,
दूरियों को किया निराश।

अस्पताल में लाई सुधार,
स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार।
शिक्षा में लाई क्रांति,
हर बच्चे के सपनों में बांटी।

व्यवसाय को दी नई राह,
तकनीक ने दिया नया सहारा।
हर दिन को किया सरल,
स्मार्ट घरों का दिया संबल।

अनुसंधान में लाई प्रकाश,
नवीनता का दिया आभास।
प्रौद्योगिकी की ये महिमा,
जीवन को दी नई रचना।

तनया रमेश गडलिंग
तकनीकी सहायक
भारतीय खाद्य निगम, दुर्ग

हर घर तिरंगा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा
शान न इसकी जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए।।

तिरंगे का अभिप्राय - महज एक झंडे के लिए इतनी बड़ी बात तो शायद ही कोई कहे। एक तीन रंगों का कपड़ा इतना महत्वपूर्ण कैसे हो जाता है, कि देश का हर नागरिक उसकी शान में जान लुटा देने के लिए तत्पर हो जाता है। कुछ तो बात अवश्य होगी इस तिरंगे में जो तन-मन-धन से बढ़कर है। इसका कारण केवल और केवल एक है, कि यह तिरंगा केवल एक झंडा नहीं है, यह तिरंगा हमारा देश है, हमारे राष्ट्र का गौरव है। 'एक होने की निष्ठा' से राष्ट्र बनता है और यह तिरंगा हमारे राष्ट्र का प्रतीक है। इसलिए किसी ने कहा है कि- **'भारत के सम्मान में 'महान शब्द' जहाँ कहीं प्रयोग किया जाता है, वहां 'तिरंगा' होता है।'**

यह तिरंगा ही है जो सबसे पहले हमारे देश का प्रतिनिधि बनकर किसी भी देश के मन में उभरता है। उसके बाद हमारे राष्ट्र के सभी प्रहरी, प्रेरणा और व्यक्तित्व उभरते हैं। तिरंगा हमारे देश के जिस भी हिस्से में लहराता हुआ दिख जाए, उसकी हदें, सरहदें आप ही तय हो जाती हैं। तिरंगा ही है जो देश में ही नहीं देश के बाहर भी हमारा राजदूत बनकर गर्व से उड़ता नजर आता है। यह जहाँ भी रहता है, देश का सूर्य उस पटल पर चमक उठता है। तिरंगा देश के संयम को दर्शाता है तो देश के संदेश को भी दर्शाता है।

निश्चय ही हमारा देश एक खूबसूरत और उत्तरोत्तर प्रगति की तरफ अग्रसर राष्ट्र है। लेकिन तिरंगे की अखंडता के समक्ष चुनौतियाँ भी आकर सामने खड़ी हो रहीं हैं। कुछ चिंताएँ, कुछ दुश्वारियाँ हैं, जो नित नए भारत के सामने प्रकट हो रही हैं। आज़ादी की 78वीं वर्षगाँठ के उपरांत भारत कुछ समस्याओं से घिरा हुआ है। जिसमें जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, धन लोलुपता, गरीबी, बेरोज़गारी, असमान वितरण, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि समस्याएँ शामिल हैं। ये समस्याएँ भारत की एकता, अखंडता और समता को प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं। आज की राजनीति भी भारत की अनेकता में एकता को ज़मींदोज़ करने पर आतुर हैं। बढ़ती भौतिकता, आधुनिकता और संयम में हो रहे ह्रास द्वारा युवाओं को अनैतिकता के पथ पर अग्रसर होने का खतरा मंडरा रहा है। वहीं नारी शक्तियों द्वारा अपने हिस्से के अनुरूप संचालन और सहभागिता में हुई कमी को देखते हुए आवाज़ें उठाई जा रहीं हैं। इन आवाज़ों की चुनौतियाँ भी राष्ट्र के सामने एक मुश्किलों भरी राह दिखा रही हैं। विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में पैर पसारना और भारतीय के बीच पैठ बनाना भी एक अन्य तरह की समस्याएँ है। इसके अलावा वैश्विक आतंकवाद और नक्सलवाद भी भारत के समक्ष चुनौतियाँ पेश करता नज़र आता है।

राष्ट्र के उत्थान के लिए हमें देश के अस्सी करोड़ युवाओं से उम्मीद रखनी चाहिए। हमें उम्मीद रखनी चाहिए भारत के नैतिक मूल्यों, सुभाष चन्द्र बोस की विरासत, सरदार भगतसिंह की क्रांति, स्वामी विवेकानंद के ज्ञान से, जो भ्रष्टाचार की जड़ को मिटाकर हर घर, हर दिल पर तिरंगा लहराता आया है। क्योंकि दुष्यंत कुमार जी की कविता के अनुसार-

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्ज़र ही सही, लहरों से टकराती तो है।
एक चिंगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

राजू कुमार शाह
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
इन्सट्रूमेन्टेशन, भिलाई इस्पात संयंत्र

पर्यावरण की सुरक्षा में एसआरयू

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई में विभिन्न प्रकार के ताप रोधी ईंटों एवं मासेस का निर्माण किया जाता है। जैसे - बेसिक ब्रिक्स, मैग कार्बन ब्रिक्स, एएमसी ब्रिक्स, सीएचएम ब्रिक्स, एल.डी. गनिंग मास, ड्राय रेमिंग मास आदि। यहां निर्मित ईंटों का उपयोग बीएसपी, बोकारो, दुर्गापुर आदि विभिन्न स्टील प्लांटों में कनवर्टर, लैडल इत्यादि की लाईनिंग बनाने एवं स्टील मेकिंग में किया जाता है।

इन सभी उत्पादों को बनाने में तरह-तरह के कच्चे माल उपयोग में लाए जाते हैं। सबसे पहले तो क्रशर एवं ग्राइंडर की मदद से उन सभी बडे आकार वाले कच्चे माल के छोटे-छोटे टुकडे किये जाते हैं एवं पाउडर बनाया जाता है। इस प्रक्रिया में भारी मात्रा में डस्ट निकलती है, जो संयंत्र के भीतर एवं आस-पास के रिहायशी इलाकों के वातावरण को दूषित करती थी। इस डस्ट के कारण लोगों में तरह-तरह की बीमारियाँ होने का खतरा बना हुआ था।

इस समस्या के समाधान हेतु एसआरयू, भिलाई संयंत्र प्रबंधन ने एक बीड़ा उठाया। अनुरक्षण विभाग के महाप्रबंधक- श्री राहुल दुबे के मार्गदर्शन एवं श्री मृणाल टेम्भरे एवं उनकी टीम के कुशल संचालन में कुछ विशेष कार्य किये। जो इस प्रकार हैं : -

1. संयंत्र के बेसिक विभाग में लगा हुआ पुराना एवं निश्चेत, डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम सन् 1998 से बंद पड़ा हुआ था एवं जो उपयोग में नहीं था। काफी लंबे समय से बंद पड़े होने के कारण उसके कलपुर्जे छिन्न-भिन्न एवं खराब हो चुके थे। अनुरक्षण विभाग ने अपनी मेहनत और लगन से उस पुराने डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम का नवीनीकरण कर उसे सफलतापुर्वक पुनर्जीवित किया। जिससे संयंत्र के भीतर प्रदूषण की मात्रा में बहुत कमी आई।
2. रॉ-मटेरियल स्टोरेज (आरएमएस) विभाग, जहाँ हर समय भारी मात्रा में डस्ट रहता है, वहाँ पर भी डस्ट से बचने का कोई साधन उपलब्ध नहीं था। अनुरक्षण विभाग की पहल पर वहाँ भी दो नये डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम लगाए गये हैं। जिसके कारण मिल हाउस विभाग एवं अन्य कार्यस्थलों पर डस्ट की मात्रा में भारी कमी आई है एवं वातावरण में फैल रहा प्रदूषण खत्म हो गया है।

"डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम" के फ़ायदे:-

1. इसका सबसे बड़ा फ़ायदा तो ये हुआ कि संयंत्र में कार्यरत कर्मचारियों एवं ठेका श्रमिकों के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा।
2. दूसरा ये कि, आस-पास के रिहायशी इलाकों के वातावरण में भी हवा का स्तर सुधरने लगा।
3. और सबसे अच्छी बात तो ये है कि जो डस्ट अब तक वातावरण में फैलकर बेकार हो रहा था एवं लोगों की बीमारियों का कारण बन रहा था, वो अब इस डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम के माध्यम से डस्ट बैग में जमा हो रहा है। उस डस्ट का उपयोग हम पुनः ईंट बनाने में कर रहे हैं, जिसके कारण हमें प्रति वर्ष 40 से 50 लाख रुपयों के कच्चेमाल की बचत हो रही हैं।

डस्ट एक्सट्रेक्शन सिस्टम का जीर्णोद्धार करके अनुरक्षण विभाग के अधिकारियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि "इंजीनियरिंग केवल मशीनों को बनाने या चलाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इंजीनियरिंग, पर्यावरण एवं वातावरण को भी स्वच्छ बनाने में कारगर है"।

राहुल दुबे
महाप्रबंधक (अनुरक्षण)
वरीय सतर्कता अधिकारी
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

सिंगल यूज़ प्लास्टिक - पर्यावरण का दुश्मन

ऐसा प्लास्टिक, जिसे केवल एक बार ही प्रयोग किया जाता है और फिर फेंक दिया जाता है उसे "सिंगल यूज़ प्लास्टिक" कहा जाता है। **प्लास्टिक के दो प्रकार होते हैं :-** 1 टिकाऊ प्लास्टिक, जैसे :- बैग, कपडे, पाइप इत्यादि
2 सिंगल यूज़ प्लास्टिक, जैसे:- पानी की बोतलें, स्ट्रॉ, किराने की थैलियाँ इत्यादि।

सिंगल यूज़ प्लास्टिक की खोज सन 1930 ईस्वी में हुई थी। सिंगल यूज़ प्लास्टिक को डीकंपोज होने में 100 साल से भी ज्यादा का समय लगता है। एक अनुमान के हिसाब से केवल 9% प्लास्टिक को ही रिसायकल किया जाता है, बाकी सारा प्लास्टिक वातावरण में मौजूद रहता है। अभी तक 8.3 बिलियन टन प्लास्टिक का निर्माण किया जा चुका है। जो प्लास्टिक वातावरण में मौजूद रहते हैं वह कहीं मिट्टी में मिल जाते हैं, कहीं समुद्र में मिलते हैं और वह हमारे भोजन में भी मिलकर हमारे शरीर में पहुंच जाते हैं। एक प्लास्टिक का बैग जिसे हम फल एवं सब्जी लेने में प्रयोग करते हैं, उसे डीकंपोज होने में 100 से ज्यादा साल का वक्त लगता है, जबकि उसकी उपयोगिता मात्र 15 से 20 मिनट की होती है। विश्व में चीन, अमेरिका और भारत, सिंगल यूज़ प्लास्टिक के सबसे बड़े निर्माता है।

एक अनुमान के अनुसार समुद्र में मौजूद प्लास्टिक वस्तुओं में 49 प्रतिशत प्लास्टिक डिस्पोजेबल प्लास्टिक है सन 2050 तक समुद्र में मछलियों से ज्यादा प्लास्टिक उपलब्ध होंगे। आज के समय में सिगरेट के अंत में जो फिल्टर लगे होते हैं वह इधर-उधर फेंक दिए जाते हैं और यह विश्व का सबसे ज्यादा पॉल्यूशन करने वाला सामान बन गया है।

अतः हमें प्लास्टिक पॉल्यूशन को रोकने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। भारत सरकार ने प्लास्टिक पॉल्यूशन को कम करने के लिए बहुत सारे नए कदम उठाए हैं। 1 जुलाई 2022 से कुछ सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग बैन कर दिया गया है। मैन्युफैक्चरिंग इंपोर्ट डिस्ट्रीब्यूशन 120 माइक्रॉन से कम थिकनेस के कैरी बैग को बैन कर दिया गया है एवं पेनाल्टी का भी प्रावधान किया गया है जिसमें कंपनी को एनवायरमेंट कंपनसेशन परमिट कैंसिलेशन एवं ऑपरेशन को बंद करना शामिल है।

भारत में सिंगल यूज़ प्लास्टिक को ख़तम करना इतना आसान नही है क्योंकि यहाँ सिंगल यूज़ प्लास्टिक का बिजनेस 90,000 करोड़ रुपए का है जो की 10 लाख लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है एवं 89,000 एमएसएमई इसके बिजनेस में लगे हुए हैं।

हमारी प्रथ्वी को प्रदूषण से बचाने के लिए हमें अपनी कुछ आदतों में सुधार करने की आवश्यकता है, जैसे:-

1. आज के दिनों में प्लास्टिक के कई विकल्प बाजार में उपलब्ध है, उनका उपयोग किया जा सकता है।
2. अपने साथ हमेशा एक बैग बाजार में लेकर जाएं, जिसमें खरीदारी का सामान रखा जा सके।
3. अपने साथ पानी की एक बोतल भी लेकर जाएं जिससे बाज़ार से पानी खरीदना ना पड़े।
4. प्लास्टिक के स्ट्रॉ को यूज़ ना करें।
5. बायोडिग्रेडेबल इको फ्रेंडली बैग का इस्तेमाल करें।

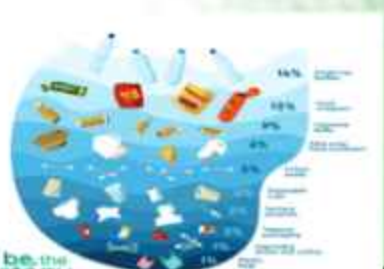

शुभम किशोर मिश्रा
प्रबंधक (अनुरक्षण एवं सिविल)
सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

हिंदी भाषा एवं साहित्य की विकास यात्रा

हिंदी भाषा की उम्र लगभग 1000 वर्ष है। संस्कृत इस भाषा की जननी है। संस्कृत से क्रमशः प्राकृत, पाली एवं अपभ्रंश उत्पन्न हुए, उसके उपरांत हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ। विभिन्न कालखंडों में कवियों एवं लेखकों ने इसे पुष्पित एवं पल्लवित किया। हिंदी की विकास यात्रा को चार कालखंडों से समझ सकते है:

1. आदिकाल - पृथ्वीराज चौहान के शासन काल में दिल्ली, कन्नौज और अजमेर के इलाके में चंदबरदाई हुए, जिन्होनें इस भाषा का प्रयोग किया। आमिर खुसरों एवं विद्यापति इस काल के प्रतिनिधि कवि थे।
2. भक्तिकाल - इस काल के प्रमुख कवि कबीरदास, तुलसीदास,मीराबाई, गुरुनानकदेव एवं मलिक मुहम्मद जायसी हुए। ब्रहम के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों के उपासकों ने हिंदी में गाया। सूफी संतों ने निर्गुण काव्यधारा को अपनाया।
3. रीतिकाल- इस काल के प्रमुख कवि बिहारी हुए। उनकी रचनाओं में श्रृंगार रस का वर्णन मिलता है। अलंकार का प्रयोग भी इसी काल में शुरू हुआ।
4. आधुनिक काल (सन् 1850 के बाद का समय) - इस काल में हिंदी भाषा का बहुमुखी विकास हुआ। लेखन शैली में गद्य, यात्रा-वृतांत एवं आत्मकथा का समावेश हुआ और हिंदी अधिक समृद्ध होती चली गयी। इस काल में हिंदी की

विकास यात्रा में चार प्रमुख पड़ाव आये:-

भारतेन्दु युग: भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में कविता की रचना की।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग: इस युग में भाषा को परिमार्जित किया गया। "सरस्वती" पत्रिका बहुत लोकप्रिय हुई।

छायावादी युग - प्रसाद, निराला, पंत एवं महादेवी वर्मा इस काल के प्रतिनिधि कवि हैं, गद्य साहित्य में इस युग को प्रेमचंद युग भी कहा जाता है।

स्वतंत्रता के बाद का युग- नयी कविता का अविर्भाव हुआ। नागार्जुन,अज्ञेय, मुक्तिबोध इत्यादि इस काल के प्रतिनिधि कवि हैं।

साथ ही हिंदी की भगिनी भाषाएँ भी फलती फूलती रहीं। सूरदास ने ब्रजभाषा में, विद्यापति ने मैथिली में, मीराबाई ने राजस्थानी में एवं तुलसीदासजी ने अवधी में महाकाव्यों की रचना की। अपनी भाषा की महत्ता का ज्ञान हमें शुरू से था। इसकी बानगी इन कविताओं में देखिये:-

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा" - विद्यापति

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"- भारतेंदु हरिश्चन्द्र

स्वतंत्रता के पहले हमारा देश कई छोटे-छोटे रियासतों में विभक्त था। स्वतंत्रता संग्राम में अखण्ड भारत का सपना देखा गया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने के लिये एक संपर्क भाषा की आवश्यकता थी। इसके लिए हिंदी को सर्वाधिक उपयुक्त माना गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा मिला। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये राजभाषा अधिनियम लाये गये। देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों ने हिंदी के विकास में बड़ी भूमिका निभायी है। साठ के दशक के बाद सांस्कृतिक क्षेत्र के हर परिवर्तन ने हिंदी को ऊँचाइयों पर पहुँचाया। साक्षरता बढ़ी तो हिंदी को करोड़ों नये पाठक मिले। प्रिंटिंग प्रेस/आफसेट प्रिंटिंग एवं कंप्यूटर का विकास हुआ, तो सबसे अधिक हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या बढ़ी। हिंदी फिल्मों ने हिंदी को दक्षिण के राज्यों तथा विदेशों तक में पहुँचाया।

नब्बे के दशक में शुरू हुयी भूमंडलीकरण का सबसे अधिक लाभ हिंदी भाषा को मिला, क्योंकि हिंदी पहले से ही मनोरंजन, साहित्य, पत्रकारिता और राजनीतिक विमर्श मे प्रयोग हो रही थी। बाज़ारोन्मुख अर्थव्यवस्था के अंतर्गत देश के अन्य सांस्कृतिक क्षेत्रों को लगने लगा कि, यदि व्यवसाय या रोजी-रोटी में बढ़ोतरी चाहिए और अखिल भारतीय स्तर पर कुछ करना है तो हिंदी का कुछ ज्ञान होना आवश्यक है। औद्योगिक विकास एवं शहरीकरण से भी हिंदी को बहुत विस्तार मिला। क्योंकि, औद्योगिक क्षेत्रों तथा शहरों में विभिन्न भाषा के लोगों की संपर्क भाषा हिंदी बनी।

आज कश्मीर से कन्याकुमारी तक एवं गुजरात से पूर्वोत्तर तक हिंदी का भौगोलिक विस्तार हुआ है। परन्तु भाषा के साथ साथ साहित्य का भी विकास होना आवश्यक है, तभी हिंदी समृद्ध होगी। युवाओं में कथा साहित्य और कविता पढ़ने की रुचि विकसित करना होगा। तकनीकी क्षेत्र में हिंदी परिधि पर ही है, कहीं-कहीं अंग्रेजी की अनुचरी है। इस विषय में और काम करने की ज़रूरत है।

सौरभ कुमार राजा
महाप्रबंधक
सेल-सीईटी

मोबाइल और इंसान

इंसान अपनी खोज, मोबाइल पर इतराता है।
पर ये हमारे जीवन को, मुश्किल में कर जाता है।।

हमने सोचा इससे हम, सारे काम बनायेंगे।
जहाँ समझ नहीं आएगा, इससे पूछते जाएंगे।
बिगड़ते हैं जब काम इसी से, कुछ समझ नहीं आता है।
बिन पूछे ही पता नहीं, क्या-क्या ये बतलाता है।

लाये थे हम इसको, अपनों का पता ढूँढने के लिए।,
इंतजार किया था बरसों, अपनों से जुड़ने के लिए।
लेकिन अपने लोगों को ही ये, व्यस्त बहुत बनाता है।
अपनों को भुला कर ये, खुद में ही उलझाता है।

हमने सोचा ये अगली पीढ़ी को, नयी तकनीकी सिखायेगा।
हताश होंगे जब भी वो, सही राह दिखलायेगा।
छोटे-छोटे बच्चों से ये, बचपन उनका चुराता है।
साथी भी छीने उनके, अपनों से दूरी बड़ी बढ़ाता है।

हमने इसको अपने जीवन का, ज़रूरी हिस्सा बनाया है।
बिन इसके हम रह न पायें, यह बना हमारा साया है।
नींद के साथ यह, कार्यक्षमता को घटाता है।
मनोरंजन के बहाने से, समय हमारा डुबाता है।

अब इंसानों को भी, इससे स्मार्ट बनना होगा।
दो कदम ये चले तो, चार हमें चलना होगा।
हमारा मन संयम अनुशासन, इन सबसे जिताता है।
बच्चों के भविष्य का चिंतन, हम सबको जताता है।

मोबाइल है आज की ज़रूरत, लेना होगा इसका साथ।
संतुलन में करना होगा उपयोग, सकारात्मकता जब होगी हाथ।
इससे ही तकनीकी और अपनापन सबको सिखाएंगे।
बच्चों को नैतिकता सिखलाकर, प्रज्ञावान बनायेंगे।

के.एन. गिरि
सहायक प्रबंधक (यांत्रिकी) गुणवत्ता
राइट्स लिमिटेड

मेरा जीवन देश के नाम

राजू एक छोटा सा बालक था। उनका परिवार एक छोटे से गाँव में रहता था। उसके चाचाजी भारतीय थल सेना में अधिकारी थे। वह जब भी घर पर आते, हमेशा राजू को साहस भरी कहानियाँ सुनाया करते थे। उसे सैनिक बनने की प्रेरणा भी दिया करते थे। इसलिए राजू के मन में बचपन से ही सैनिक बनने की इच्छा जागृत हो गई थी। राजू को बचपन से ही भारतीय सेना के पराक्रम की गाथाएँ और युद्ध की विभीषिकाएँ मुखाग्र याद थीं। उसके चाचाजी कहते थे युद्ध सदैव ही हानिकारक होता है। युद्ध को यथासंभव टालने का प्रयास किया जाता है, किंतु जब देश की अस्मिता और सीमाओं की रक्षा की बात आती है, तब युद्ध अपरिहार्य हो जाता है। ऐसे में सैनिक को अपना कर्तव्य निभाते हुए देश की रक्षा करने के लिए युद्ध लड़ना ही पड़ता है, और यही एक सैनिक का धर्म है।

चाचाजी अक्सर कहा करते थे कि, देश के लिए यदि हमें अपना सर्वोच्च बलिदान देना पड़े, तो हमें कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए, राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग करने का सौभाग्य हर किसी को नहीं मिलता। वे धन्य होते हैं, जिन्हें भारत माता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने का अवसर मिलता है। बलिदानी सैनिक रणक्षेत्र में मरकर भी हमेशा हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं।

एक बार राजू के चाचाजी छुट्टी लेकर घर आये हुए थे, कि अचानक उन्हें सूचना मिली कि, उन्हें तत्काल अपनी ड्यूटी में पहुँचना है। रेडियो में लगातार समाचार प्रसारित हो रहा था कि, दुश्मन देश ने आक्रमण कर दिया है, सभी सैनिकों की छुट्टियाँ रद्द कर दी गई हैं। सभी सैनिकों को अपने कार्यस्थल में रिपोर्ट करना है। चाचाजी तुरंत रवाना हो गए। युद्ध छिड़ गया था। प्रतिदिन समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविज़न पर युद्ध के समाचार आते थे।

एक दिन राजू के पिताजी को टेलीग्राम मिला कि, राजू के चाचा जी युद्ध क्षेत्र में लड़ते-लड़ते बलिदान हो गए हैं। राजू के परिवार सहित उनका पूरा गाँव दुखी था, पर सभी के हृदय में गर्व का भाव था। चाचा जी की तिरंगे झण्डे में लिपटी पार्थिव देह को गाँव लाया गया। साथ आये हुए सैनिकों ने उन्हें सलामी देकर पूरे सैन्य सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। राजू के दादा-दादी का रो-रोकर बुरा हाल था। चाचाजी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। भारत ने वह युद्ध जीत लिया था।

समय के साथ पूरे परिवार ने अपने-आप को संभाला। चाचाजी अब दुनियाँ में भले ही नहीं थे, किंतु उनकी कही गई बातें हमेशा राजू को उसके ध्येय की ओर खींच ले जाती थीं। राजू धीरे-धीरे पढ़ लिखकर बड़ा हो गया। अब राजू के पास उसकी स्नातक की डिग्री थी। अब राजू सेना में भर्ती होना चाहता था। परंतु राजू के माता-पिता राजू के चाचाकी तरह ही राजू को भी नहीं खोना चाहते थे। इसलिए उन्होंने राजू को सेना में जाने से मना किया। घरवालों के दबाव में राजू ने सरकारी विभागों में नौकरी के लिए आवेदन करना शुरू किया। राजू को शीघ्र ही एक अच्छी नौकरी मिल गई।

राजू की इच्छा सैनिक बनकर युद्ध क्षेत्र में जाने की थी इसलिए राजू का मन काम में नहीं लगता था और अपना कोई भी काम वह अच्छी तरह से नहीं कर पता था जिसके कारण उसे जल्द ही नौकरी से हाथ धोना पड़ा। राजू की माँ को जब इस बात का पता चला, तो उन्हें बहुत दुख हुआ। उसके पिताजी भी बहुत दुखी थे और इसी दुख में डूबे रहने के कारण मिल में काम करते समय वे अपने दोनों हाथ गँवा बैठे। राजू की नौकरी छूटने का और राजू के पिता के हाथों को खोने के कारण राजू की माँ को गहरा सदमा पहुँचा, वे धीरे-धीरे करके बीमार रहने लगीं, एक दिन अस्पताल में भर्ती हुईं पर उनकी हालत बिगड़ती ही चली गई और अंततः बहुत कोशिशें के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका।

अब राजू के परिवार की आर्थिक स्थिति खराब रहने लगी। मिल से थोड़ी बहुत सहायता राशि मिल जाया करती थी, परंतु उससे घर का खर्च ना चल पाता था। इस कारण राजू ने थोड़ी रकम उधार लेकर एक छोटी सी दुकान खोली जिससे उसको कुछ कमाई हो जाती थी। घर का खर्च जैसे-तैसे करके चल रहा था।

राजू के पिता को सुबह-सुबह उठकर टहलने जाने की आदत थी और वह टहलते-टहलते अक्सर बहुत दूर निकल जाया करते थे। उस दिन भी वह टहलकर वापस आ रहे थे, तब उन्हें ख्याल आया कि आज स्वतंत्रता दिवस है। उस दिन वे टहल कर वापस घर की तरफ ना मुड़कर परेड मैदान की ओर मुड़ गए वहाँ पर परेड होने के बाद झांकियाँ निकाली गई और अंत में वीर सैनिकों को सम्मानित किया गया।

जब राजू के पिता ने सैनिकों को सम्मानित होते देखा तो उन्हें महसूस हुआ कि यदि मैंने राजू को सैनिक बनने दिया होता तो शायद आज राजू को भी यह सम्मान मिल रहा होता और यदि सम्मान नहीं भी मिल पाता तो भी वह अपनी मातृभूमि की रक्षा तो अवश्य ही कर रहा होता। राजू के पिता को लगा कि, उन्होंने एक बहुत बड़ी भूल कर डाली है। अब उनका मन शीघ्र ही घर जाने को हो रहा था। घर पहुँचते ही उन्होंने राजू को बुलाकर इस बात की स्वीकृति दे दी, कि अब राजू सेना में भर्ती हो सकता है।

राजू का मन प्रसन्नता से झूम उठा, उसके बचपन का सपना पूरा करने की स्वीकृति जो उसे मिल गई थी। उसने सैनिक बनने के लिए प्रशिक्षण लिया, कठोर शारीरिक अभ्यास किये, परीक्षा दी और अंततः सेना में उसका चयन हो गया। थोड़े दिनों बाद एक अच्छा सा रिश्ता देखकर घरवालों ने राजू का ब्याह करवा दिया। समय के साथ राजू एक बेटे का पिता बन चुका था। राजू जब भी छुट्टी लेकर घर आता, अपने बच्चे के साथ खेलने में उसे बहुत आनंद आता था, गाँव का जीवन उसे बहुत पसंद था, पर उसे अपनी ड्यूटी भी हमेशा याद आती थी।

युद्ध करना देश की रक्षा करना एक सैनिक का परम धर्म होता है। एक दिन समाचार मिला कि, युद्ध आरंभ हो गया है, और शीघ्र ही राजू को भी ही युद्ध भूमि में जाने के लिए चुन लिया गया था। कुछ दिनों के भीषण युद्ध के पश्चात भारतीय सेना ने सैनिकों के पराक्रम से युद्ध जीत लिया, लेकिन राजू युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। राजू के परिवार को एक बार फिर देश के लिए घर के एक सदस्य के बलिदान होने की सूचना मिली।

आज भी स्वतंत्रता दिवस का दिन था। आज राजू इस दुनियाँ में नहीं है। पर उसकी वीरता के लिए, रणभूमि में अदम्य साहस और शौर्य का प्रदर्शन करते हुए देश पर अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए राजू को मरणोपरांत सैन्य सम्मान प्रदान किया गया और उसका पुरस्कार राजू की पत्नी ने ग्रहण किया। आज राजू के पिताजी की आँखों में आँसू थे लेकिन सर ऊँचा था और सीना गर्व से तन गया था।

मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम व समर्पण भाव रखने वाले बलिदान से कभी पीछे नहीं हटते।

धन्य हैं, भारत माता की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले हमारे वीर सैनिक।

जय हिंद की सेना।

मीना नागदेव
भिलाई इस्पात संयंत्र

सफ़र

निकल पड़ता हूँ, तुम्हारे शहर की सूनी सड़कों पर,
पेड़ से गिरे हुए सूखे पत्तों को कुचलता हुआ।
और कभी सर्द मौसम में ओढ़ लेता हूँ,
तुम्हारी यादों की चादर।

महसूस करता हूँ, उन गलियों का सूनापन,
जहाँ कभी हम हाथ पकड़कर चले थे।
हाँ...! नुक्कड़ के किनारे वाले मंदिर में,
वो भिखारन आज भी वहीं बैठी है।

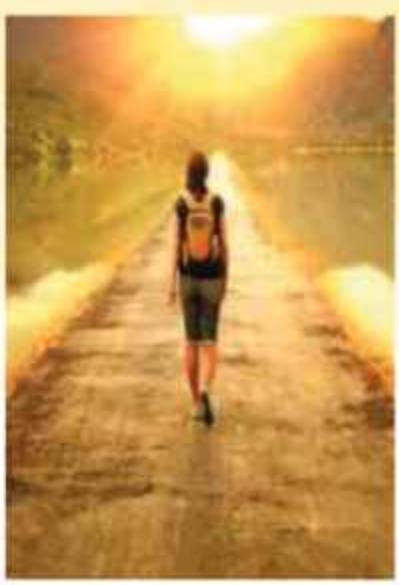

जिसने चंद सिक्के पाकर,
हमारी जोड़ी की सलामती की दुआ माँगी थी।
मंदिर में उठते हुए धुएँ में मैं देख पा रहा हूँ,
उस दुआ का काफ़ूर होना।

वो बरगद का पेड़ अभी भी वहीं है,
लेकिन थोड़ा झुका हुआ।
कितने रिश्ते बिछड़ने का दर्द, वह भी सहता।
थोड़ा आगे निकलता हूँ।

वह गन्ने के रस वाला दिखाई नहीं दे रहा,
मौसम जो नहीं है उसका यहाँ।
बेमौसम कौन टिकता है भला,
तुमको भी तो लौटना ही था।

थोड़ी बारिश हो रही है, रुक-रुक कर,
कभी तेज़, कभी धीमी|
तुम्हारी यादों की तरह,
तुम्हारे घर के सामने से गुजरता हूँ।

वहाँ अब ताला लगा हुआ है,
शायद कोई नहीं रहता, सिवा तुम्हारी यादों के।
अब थक गया हूँ, जरा हाथ तो देना,
मैं भी भुलक्कड़ हो गया हूँ, तुम तो होकर भी नहीं थीं।

चलो मंदिर में दुआ माँग लेता हूँ,
पर अब मंदिर से उठते हुए धुएँ से सहम जाता हूँ।
सफ़र में रात काफ़ी हो गई है, मैं लौटना चाहता हूँ,
और अब बरगद को और झुकता हुआ नहीं देख सकता।

सुधीर हरणे
वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी
लेखा परीक्षा कार्यालय

वो जो छुट्टियाँ थीं

हम लोग 80-90 के दशक की पीढ़ी हैं, न टीवी, न मोबाइल, इंटरनेट के बारे में तो कोई सोच भी नहीं सकता था, मनोरंजन का एकमात्र साधन थीं फिल्में। वो भी एकल सिनेमा घर, और वहाँ जाना, फिल्म देखना, किसी त्योहार से कम नहीं होता था, बाकायदा प्लानिंग बनाई जाती, लंबी लाइन लगी होती और कई बार ऐसा होता कि देखने गए हैं, 3 से 6 की फिल्म, लेकिन भीड़ के कारण टिकट नहीं मिली और अगले शो तक वहीं कहीं टाइमपास करते। लेकिन चाव इतना, कि फिल्म देखे बगैर लौटते नहीं।

फिल्म देखने के लिए एक-एक चिल्लर पैसे का जुगाड़ करना भी एक चैलेंज और एक बड़ा मिशन ही था, 3 साल तक के बच्चे का टिकट नहीं लगता था तो मेरा छोटा भाई 6 साल का होते तक भी 3 का ही बना रहा। खैर बात करते हैं, गर्मी की लंबी छुट्टियों की, दादी, नानी के घर जाने की कहानी ज्यादा याद नहीं है, लेकिन याद है लाइब्रेरी से पुस्तकों का लाना, उस समय इसका बड़ा क्रेज़ था मोहल्ले में लगभग हर घर के लोग छुट्टियाँ आते ही लाइब्रेरी ज़रूर लगा लेते अब जिसका एग्ज़ाम पहले खत्म होता, वो तो आराम से लाइब्रेरी से लाई रंगीन अमर चित्र कथाओं का आनंद उठाता और हम कोर्स की किताबों में घुसे रहते।

ये समय बड़ा कष्ट कारक होता, लेकिन मैं चोरी-चोरी एक्ज़ाम के वक्त भी उन पुस्तकों को जल्दी-जल्दी पढ़ लेती, फिर दो चार दिनों में जब एग्जाम खत्म होते तो सबसे ज्यादा रिलैक्सेशन मिलता, कि अब बुक चोरी-छुपे पढ़ने की ज़रूरत नहीं, वो छुट्टियों की दोपहर होती, घर में घुप्प अंधेरा होता सारे कमरे में पर्दे के साथ साथ गीले चद्दर भी खिड़कियों में टाँग दिए जाते जिससे गर्मी का एहसास न हो, लेकिन हम बच्चे क्या सो सकते थे, चुपके-चुपके कम ज्यादा रोशनी में उन रंगीन पुस्तकों को पढ़ते, वो अमर चित्र कथाएँ, वो साबू और चाचा चौधरी, वो पिंकी, सुमन सौरभ और भी न जाने क्या-क्या, कुछ जासूसी मिनी पॉकेट बुक्स।

मुझे याद है, उन दिनों मैं शायद कक्षा 6 की छुट्टियों में रही होंगी। भैया चूँकि बड़ा था, तो वो गुलशन नंदा के उपन्यास लेकर आता, लेकिन हम तो बच्चे थे, तो हमें अभी उपन्यास पढ़ने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन मन तो वहीं करने का होता है न, जिसे करने के लिए मना किया जाए। तो मैं चोरी-चुपके एकाध बुक पढ़ने लगी, आगे क्या के सस्पेंस ने पूरी उपन्यास पढ़वा डाली तो 6वी की छुट्टियाँ थीं, जब पहला उपन्यास पढ़ा। फिर याद है नानी या शायद बुआ के घर गए खेत, बड़ा सा घर, हरियाली और बहुत सारे चाचा-मामा के बच्चें, दिन भर धमाचौकड़ी, घर के अंदर बैठ कर साँप-सीढ़ी, लूडो वगैरह होता, पेड़ों से जामुन, आम तोड़ कर घर से नमक मिर्च लाकर चटकारे लेकर खाने का मज़ा ही अलग था। हाँ मज़े की बात ये रही, कि वहाँ भी चचेरे भाई की लाइब्रेरी थी। तो लाइब्रेरी से काफी सारी बुक्स लाकर दोपहर उसे पढ़ने में बिता देते। पढ़ने का ये चस्का आगे की छुट्टियों में बढ़ता ही रहा। सस्ती लोकप्रिय बुक्स से होते हुए साहित्यिक प्रेमचंद, शरतचंद्र, शिवानी यहाँ तक कि मैक्सिम गोर्की का साहित्य भी इन्हीं छुट्टियों में चट कर डाला।

ये तो बातें हैं बुक्स रीडिंग की, आजकल बच्चों को प्रेरित किया जाता है, बेटा बुक पढ़ो, बुक पढ़ो। लेकिन हम लोग उस समय डाँट भी खाते थे... जब देखो कामिक्स में घुसे रहते हैं।

हाँ, एक मज़ेदार बात, उस समय दोपहर में घर की बालकनी से रस्सी में बुक फँसाई जाती और दूसरे अड़ोसी-पड़ोसी के घर भेजी जाती। ये टास्क भी बड़ा मज़ेदार होता घर के अभिभावक सो रहे होते और हम बच्चे किताबों की अदला बदली करते रहते इससे हमें, ज्यादा बुक पढ़ने को मिल जाती।

अच्छा दोपहर तो निकल गई, शाम का क्या, शाम को सारा मोहल्ला निकल जाता सामने वाले मैदान में। अपने अपने घरों से बोरियाँ लेकर हरे मैदान में टाइम पास करने, बच्चे धमा चौकड़ी करते और माताएँ गपशप। मैदान में अंधेरा होता, स्ट्रीट लाइट की रोशनी दूर से छुटपुट आती, पर वो अंधेरा भला लगता। दौड़ना भागना छुपम छुपाई, चोर-पुलिस, टीचर-टीचर और भी न जाने क्या क्या गेम खेलते। शाम से रात फुल ऑन मूड में। घर जाने का मन नहीं होता। लेकिन सुबह 5 बजे से उठकर लाइब्रेरी भी जाना होता, देर करेंगे तो अच्छी बुक्स छँट जाएंगी, उफ़ क्या दिन थे वो।

अच्छा एक और बात अचार, पापड़, मुरकू, चिप्स, बड़ी ये सब बकायदा घर में बनाए जाते और सारा मोहल्ला जुट जाता एक महोत्सव ही होता। ये दरअसल पूरे साल भर की तैयारी होती और साल भर इन चीजों का लुत्फ़ उठाया जाता।

इसके अलावा छुट्टी की एक मधुर स्मृति है रामायण का रंगमंच, हाँ उन दिनों कलाकारों की टोली अपने पूरे साजोसामान के साथ एक शहर से दूसरे शहर जाया करती थी, रामायण का मंचन करने। रामायण शाम कोई 7 बजे के आसपास शुरू होता। किसी मैदान वगैरह में वो लोग अपना डेरा जमाते और 7 बजे के कार्यक्रम के लिए हमलोग 4 बजे से ही अपनी बोरे चद्दर वगैरह लेकर पहुँच जाते, अपना स्थान बुक करने के लिए।

रामायण कोई महीने भर चलता। बीच-बीच में मुख्य सूत्रधार अपनी टोली के साथ दोहे-चौपाइयों को मधुर स्वर में गाते। उसे समझाते, हम भाव विभोर होकर रामचरित मानस का रसपान करते। उस समय रामानंद सागर की रामायण नहीं बनी थी। खैर इसके बनने के बाद सड़कें सूनी हो जाती थीं, वो तो एक अलग कहानी है, लेकिन हमने मैदान में चलने वाली उस रामायण का भरपूर रसपान किया है।

जिस दिन ये टोली या रंगमंच उतरती, ऐसा लगता बेटी की विदाई हो गई है, मन बहुत रोता, लेकिन उसमें किए गए नाट्य, गायन और हाँ विदूषक भी अभी तक याद है।

धीरे धीरे समय ने दस्तक दी और आगाज़ हुआ बुद्धू बक्से का, फिर हर घर में टीवी फिर और आगे का समय।

समय तो अपनी रफ्तार से बह रहा है। समय के साथ कई चीजें छूट भी जाती है, कई जुड़ जाती है। कुछ कसक सी रह जाती है। आज अड़ोसी-पड़ोसी से बात करने में भी एक संकोच है, पर पहले अजनबियों से भी दोस्ती आराम से हो जाती थी। ऐसा नहीं है कि पुराना सब कुछ अच्छा ही था, कुछ बड़े दादा टाइप भैया लोग या कुछ गंदे अंकल लोग भी थे, पर उतनी जागरूकता नहीं थी उनसे बचने की।

आखिर में केवल इतना ही समय के इस चक्र से कुछ अच्छा समेट लीजिए, कुछ दूसरों को सिखा दीजिए, कुछ दूसरों से सीख लीजिए।

रागिनी गुरव
प्राथमिक शिक्षिका,
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

चमत्कार

यह उन दिनों की बात है, जब मोबाइल नहीं हुआ करते थे। टेलीफोन भी कुछ चुनिंदा, आर्थिक रूप से संपन्न लोगों के घर में हुआ करते थे. आज तो जीवन अत्यंत सहज और सुगम हो गया है. दूरियाँ मिट गई हैं। दूर-विदेश में बैठे बच्चों से मिनटों में, वीडियो कॉल पर, बातें करते हैं तो लगता है मानो सामने बैठे हैं। अब तो पैसा ट्रांसफर करना भी कितना आसानहो चुका है। अभी हाल ही में मेरे बेटे को कॉलेज का फॉर्म सबमिट करना था। उसने फॉर्म भरना शुरू किया और उसके बाद उसे याद आया कि उसके अकाउंट में फीस भरने के लिए पैसे नहीं है। उसने एक मैसेज मुझे भेजा। इससे पहले कि वह अपना फार्म पूरा भर पाता, उसके पास पैसे पहुंच चुके थे।

चलिए, हम वापस उसी घटना पर चलते हैं। तो यह बात उन दिनों की है जब न मोबाइल हुआ करते थे न ही, पैसा ट्रांसफर की सुविधा थी। संपर्क करने के लिए पोस्टकार्ड और अंतर्देशीय पत्रों का चलन था।

एक दिन छोटी बहन को अपनी बड़ी बहन से मिलने की बहुत प्रबल इच्छा हुई। वह सीधे ट्रेन पकड़कर हैदराबाद आ गई। समस्या छोटी हो या बड़ी, किसी अपने से बाँट लेने से बड़ी राहत मिलती हैं। सच ही कहा गया है कि रक्त सम्बन्ध बहुत गहरे होते हैं। लंबे समय बाद दोनों बहने मिलीं तो रात भर खूब गपशप चली। अपने दिल की सारी बातें एक दूसरे को कह सुनाई। फिर बातों ही बातों में, दोनों को एकसाथ विचार आया, क्यों न शिरडी जाकर साई बाबा के दर्शन कर आयें.. इस विचार मात्र से दोनों की खुशी और उत्साह का ठिकाना न रहा। सुबह उठकर तैयारी की और उसी शाम को 6:00 बजे की बससे टिकट भी करवा लिया। शाम को, छोटी बहन ने कुछ पैसे बड़ी बहन को दिए और कहा कि सारा खर्च तुम ही करना, ये पैसे तुम अपने ही बटुए में रख लो। बड़ी बहन ने हामी भर दी और पैसे बटुए में रख लिए बस की टिकट तो हो ही चुकी थी। शाम ६ बजे दोनों बहने रवाना हुई। शिर्डी पहुंची, बस स्टॉप पर उतरी, वहां जाकर भक्ति निवास में निःशुल्क कमरा लिया। नहा धोकर तैयार होकर दर्शनों को निकली। दर्शन को जाने के पहले बड़ी इच्छा हुई कि चाय पी जाए चाय वाले की दुकान के पास पहुंचकर अपना पर्स खोला तो बटुआ नदारद दोनों बहनों को काटो तो खून नहीं, फिर याद आया कि बटुआ तो घर पर मेज पर ही छूट गया है। अब दोनों करें तो करें क्या? किस से मदद ते ? कहाँ जाएँ? रह-रह कर अपनी मूर्खता को कोस रही थीं। पश्चाताप भी हो रहा था कि एक ही बटुए में दोनों के पैसे रख लिए थे। लेकिन अगली समस्या वह थी कि आज पूरा दिन शिर्डी में रहना है, दर्शन करना है, प्रसाद खरीदना है और उसके बाद वापसी का टिकट भी तो लेना है। दोनों के पास एक पैसा तक नहीं। कहीं हाथों की चूड़ियाँ तो गिरवी नहीं रखनी पड़ेगी? हे भगवान अब क्या होगा? नए अनजान शहर में किससे मदद मांगे?

फिर याद आया कि हम तो बाबा के दर्शन करने शिरडी आये हैं। अब सारा भार उन पर है। धैर्यपूर्वक दर्शन को चलते हैं। उसके बाद सोचेंगे क्या करना है। जब विपदा आन पड़ती है तो भक्ति गहरी हो जाती है। जब दोनों बहनें दर्शनों को पहुंची तो लगा, बाबा मंद-मंद मुस्कुरा रहे हैं। बाबा के चरणों में प्रणाम करते हुए दोनों की बुरी तरह रुलाई ही फूट गई।

इधर बाबा तो अपने ढंग से कुछ दूसरी ही तरह से व्यवस्था कर रहे थे। इस घटना के 3 दिन पहले, उनके भाई को अचानक ऑफिस के कार्य से मुंबई जाना पड़ा। ऑफिस का काम जल्द ही खत्म हो गया। अगला दिन कुछ काम न था तो भाई को विचार आया क्यों न आज शिरडी पहुँच कर बाबा के दर्शन किये जाएँ। मंदिर परिसर पहुँच कर दर्शन किये। बहुत ही अद्भुत अनुभव हुआ और दर्शन करके जैसे ही बाहर निकले तो अपनी दोनों बहनों को देख हर्ष का पारावार न रहा, तीनों भाई बहन बहुत देर तक हर्षातिरेक में अश्रुधारा बहाते रहे। उसके बाद बहनों ने अपने भाई को सारी व्यथा कह सुनाई, कि कैसे बटुआ घर भूल आये और कैसे बाबा ने तुम्हें हमारी मदद के लिए ही भेजा है।

अब तीनों ने, सबसे पहले, पास के होटल में जाकर भर पेट भोजन किया। उसके बाद भाई ने उन्हें ससम्मान बस में बिठाया और रास्ते के लिए कुछ पैसे मुट्ठी में पकड़ा दिए। अब इसे चमकार कहें केवल संयोग कहें या प्रबल विश्वास की जय या चमत्कार यह आप सुविज्ञपाठक स्वयं तय करें।

पुरानी सोच

बहुत पुरानी वात है। यमुना काकी अपनी पुत्री, दामाद और नाती-नतिनी के संग रहती थी वृद्ध कृशकाय यमुना का जीवन अत्यंत सादगी पूर्ण था और ईश्वरीय आराधना में ही जीवन व्यतीत होता। वे अल्पाहारी, एकाहारी थीं और सायंकाल मात्र फलाहार करती भोजन करने के लिए किसी भी धातु के पात्रों का प्रयोग वर्जित था इसलिए प्रतिदिन केले के पत्ते में ही भोजन किया करती थी।

हर सुबह घर के सामने केले के पत्ते वेचने वाला आता तो एक पत्ता खरीद लेतीं। उन दिनों फ्रिज तो था नहीं, सो जो नया केले का पत्ता आता, उसे एक गीले कपड़े में लपेटकर सहेज कर रख देती और पिछले दिन खरीदे गए पत्ते पर ही भोजन करती।. इस नए पत्ते को अगले दिन के प्रयोग के लिए सहेज कर रख देती। यानी कई वर्षों से प्रतिदिन पीले पत्ते पर भोजन करती और हरा पत्ता ताजा वाला सदेव कपड़े की ओट में सहेज कर रखा रहता। और जब उसकी बारी आती अगले दिन, तब तक वह पीला हो जाता।

सबसे छोटी दुलारी नातिन सुंदरा ने देखा कि नानी हर दिन पीले पत्ते में भोजन क्यों करती हैं? जब कि प्रतिदिन एक नया ताजा पत्ता खरीदती हैं। उसने नानी से बड़े दुलार से पूछा। नानी के पास इसका कोई जवाब तो था नहीं, सो बच्ची को डपट दिया जा बाहर जाकर खेल।

आखिर सुंदरा को एक तरकीब सूझी, उसने अगले दिन नानी से नज़र बचाकर चुपके से वह पुराना वाला पीला पड़ चुका पत्ता गाय को खिला दिया। अब नानी भोजन करने बैठी तो बहुत ढूंढा, पर वह पुराना पत्ता नहीं मिला। थक-हार कर नानी को उस दिन हरे ताजे पत्ते में भोजन करना पड़ा लेकिन नानी तो नानी ठहरी। अगले दिन फिर पत्ते वाले से दो केले के पत्ते खरीदे और एक अगले दिन के लिए रख दिया।

अनुराधा धनांक
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड, दुर्ग

फहरा दो तिरंगा

फहरा दो फहरा दो तिरंगा, सारे हिन्दुस्तान में।
हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, हर दिल, हर इंसान में।
चहुँ ओर सबके दिलों में, खुशियों का अंबार हो।
स्वर्ग लगे भारत भूमि, जन जन लगे एक परिवार हो।
फहरा दो, फहरा दो तिरंगा।
वंदे मातरम हो होठों पर, जनगण हर दिल में अमर हो।
लड़ें भिड़ें न भाई-भाई, अमन रहे, न कोई समर हो।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, चहुँ ओर सुखधाम हो।
देशभक्ति की अलख जगे, जिसकी कभी न शाम हो।
फहरा दो, फहरा दो तिरंगा।
माथ बने हिमालय का शिखर, चाल चरित्र गंगाधाम हो।
विश्व बंधुत्व का भाव लिए, जन जन का सिद्ध काम हो।
राम राज्य की चाहत लेकर, सोया तंत्र जगा दो।
दुश्मन जो कभी आँख तरेरे, सीना छलनी कर आग लगा दो।
फहरा दो, फहरा दो तिरंगा।
लाशों पर न कोई रोटी सेंके, घोटालों पर गिरे गाज।
नारी अब अबला न रहे, साँपों के लिए बने बाज।
शूरवीर इस तिरंगे खातिर, देते हैं अपना बलिदान।
जरा सोचना वक्त मिले तो,
सीमा पर तुम दे सकते हो जान।
फहरा दो, फहरा दो तिरंगा।
युगों युगों तक अमर रहे, आज़ादी का गुणगान हो।
ध्वज तिरंगा कभी ना झुके, वतन के लिए सम्मान हो ।
फहरा दो, फहरा दो तिरंगा।

विजेन्द्र कुमार वर्मा
इंजीनियरिंग एसोसियेट
कोक ओवन एवं कोल केमिकल विभाग
भिलाई इस्पात संयंत्र

एफ सी आई में प्रौद्योगिकी

टेक्नोलॉजी (प्रौद्योगिकी) आधुनिक समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो दैनिक जीवन के हराको प्रतिसती है। इसकी महत्ता विभिन्न क्षेत्र में देखी जा सकती है। प्रौद्योगिकी आधुनिक जीवन के लिए आवश्यक है| ही संचार, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, दैनिक सुविधाओं और नवाचार में सुधार लाने में योगदान देती है।

खाद्य उद्योग में प्रौद्योगिकी का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है, जिससे न केवल उत्पादन और प्रसंस्करण में सुधार हुआ है बल्कि गुणवत्ता और सुरक्षा भी बढ़ी है। एफ सी आई में खाद्य सुरक्षा और गुणावला नियंत्रण में सुधार के लिए कई उन्नत तकनीकों की अपनाया है। इनमें DOS, WINGS, RIGE MIT मशीनें, और AGS मशीन जैसी तकनीकें शामिल हैं। छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय कार्यालय में स्थापित आधुनिक प्रयोगशाला को विशेष रूप से सराहा गया है। इस प्रयोगशाला में सभी आधुनिक उपकरण और मशीनें मौजूद हैं जो स्थानीय परीक्षण की सुविधा प्रदान करती हैं और अन्य पर निर्भरता को कम करती हैं। ये सभी पहले पारदर्शिता बढ़ाने, कार्यभार को कम करने और अधिक सटीक परिणाम प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रौद्योगिकी की बढ़ी महत्ता, खादय सुरक्षा में लाई नयी व्याख्या।
एफ सी आई ने किया ये कमाल गुणवत्ता में बढ़ी नयी मिसाल।

इस लेख में हम एफसीआई द्वारा पेश की गई नवीनतम तकनीक स्वचालित अनाज विश्लेषक (Automatic Grain Analyzer) को समझने का प्रयास करेंगे। यह मशीन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित है और नेबुला इनोवेशंस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 'मेक इन भारत' पहल के तहत निर्मित की गई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में विभिन्न केंद्रों पर वर्तमान में 350 से अधिक AGA मशीनें स्थापित की गई है।

स्वचालित अनाज विश्लेषकः एक क्रांति

1. त्वरित सैंपलिंगः यह मशीन अनाज के नमूनों का त्वरित विश्लेषण करने में सक्षम है जिससे समय की बचत होती है और प्रक्रिया अधिक कुशल बनती है।

2. उन्नत पारदर्शिता मशीन का उपयोग पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। सटीक और त्वरित परिणामों के साथ, डेटा की सत्यता और प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है।

3. सटीक परिणाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से मशीन सटीक और विश्वसनीय परिणाम प्रदानकरती है, जिससे गुणवत्ता नियंत्रण में सुधार होता है।

4. कार्यभार में कमी स्वचालित प्रणाली के कारण मैन्युअल प्रयासों में कमी आती है. जिससे कार्यबल पर दबाव कम होता है और उनकी उत्पादकता बढ़ती है।

एफ सी आई द्वारा अपनाई गई यह नवीनतम तकनीक भारतीय खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता नियंत्रण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो रही है। स्वचालित अनाज विश्लेषक मशीन न केवल समय की बचत कर रही है, बल्कि पारदर्शिता और सटीकता में भी अभूतपूर्व सुधार कर रही है। 'मेक इन भारत' पहल के तहत विकसित यह तकनीक भारतीय खाद्य निगम के लिए एक गेम चेंजर साबित हो रही है. और इसे एफ सी आई के विभिन्न केंद्रों पर स्थापित किया जा रहा है। आने वाले समय में इसके व्यापक लाभ देखने को मिलेंगे।

बुद्धभूषण दिलीप यशवंते
तकनीकी सहायक
एफ सी आई, दुर्ग

हर घर तिरंगा

आज वैश्विक आधुनिकता के इस युग में जब हर हाथ में मोबाइल है, सूचना के सभी साधन 5-जी स्पीड के साथ सहज उपलब्ध हैं, जब 30 सेकेण्ड से भी कम समय के हिप-हॉप और रैप से भरपूर शॉट्स और रील्स युवाओं को पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने पर मजबूर कर रहे हैं तथा हमारे देश के गौरवशाली इतिहास, आज़ादी के लिए किए गए संघर्षों, बलिदानों के साथ-साथ विभिन्न लोक कलाओं, संस्कृतियों, आदर्शों, मूल्यों को धुंधलाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं, तब भारत सरकार का यह राष्ट्रव्यापी अभियान "हर घर तिरंगा" उन धुंधली छवियों को उज्ज्वल करने तथा देशभक्ति और राष्ट्रहित के लिए जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

किसी भी देश का ध्वज उस देश के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का प्रतीक होता है। यह ध्वज नागरिकों के लिए सबसे सम्मानित और पवित्र चिन्ह होता है, और यही बात हमारे तिरंगे पर भी लागू होती है। भारतीय राष्ट्रध्वज, जिसे हम तिरंगा कहते हैं, केवल एक झंडा नहीं है, यह हर भारतीय के दिल में गर्व और सम्मान की भावना जगाता है। तिरंगा हमारे देश का अभिमान है, हमारी संस्कृति की पहचान है, और इसके पीछे हजारों वीरों के बलिदान की अमर गाथाएँ जुड़ी हैं। यह झंडा केवल कपड़े का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि साहस, त्याग और देशभक्ति की कहानियों का प्रतीक है।

तिरंगा देशप्रेम की एक भावना है, जिसे बचपन से ही मैंने महसूस किया है। मुझे याद है मेरे दादा जी एक सरकारी स्कूल में चपरासी थे। हम सब बच्चे स्वतंत्रता दिवस और स्वाधीनता दिवस में स्कूल ग्राउंड में इकट्ठा होते, मैं लाइन में खड़ा अपने दादाजी को देखता, वो किस तरह से प्रसन्न मन से मंच को फूलों से सजाते, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए आवश्यक व्यवस्था करते, बच्चों के लिए मीठे बूंदी के काग़ज़ के पैकेट तैयार करते। प्राचार्य एवं अतिथियों के द्वारा ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रगान गाया जाता। मैं अपने दादाजी को ही देखता वो हांफते मंच के नीचे खड़े होकर राष्ट्रगान गाते। मैं घर आकर दादाजी से कहता, आप क्यों झंडा नहीं फहराते, तो वो मुस्कुरा देते और मुझे स्वतंत्रता दिवस के बारे में, अंग्रेजों से हुई लड़ाई और देश के लिए समर्पित लोगों के बारे में बताते। हालांकि मेरे दादाजी के सेवानिवृत्त होने के कुछ वर्षों बाद स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर गाँव के एक स्कूल में उन्हें अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उस दिन मैं भी अपने दादाजी के साथ स्कूल गया। मंच पर उन्हें ध्वजारोहण हतु आमंत्रित किया गया और अपने कँपकपाते हाथ से पोल में बँधी डोरी को खींचकर तिरंगे को ऊपर उठाकर दादाजी ने तिरंगा फहराया। मैं चश्मे के अंदर से उनके आँखों की नमी देख पा रहा था, जो तिरंगे के प्रति उनके सम्मान, देशप्रेम और गर्व को दर्शा रही थी, जिसे उस समय मेरे दादाजी महसूस कर रहे थे।

देश की आन बान और शान के प्रतीक तिरंगे को समर्पित यह महोत्सव उन भारतीयों के सम्मान में है, जिन्होंने न केवल भारत को उसके विकासवादी पथ पर आगे बढ़ने में मदद की है, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी को आत्मनिर्भर भारत की भावना के साथ भारत 2.0 को लॉन्च करने के उनके दृष्टिकोण को साकार करने में सहायता करने की शक्ति और क्षमता भी रखते हैं।

किशोर कुमार साव
जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट
धमन भट्ठियां, भिलाई इस्पात संयंत्र

हर घर तिरंगा 2024 : राष्ट्रीय एकता का प्रतीक

"हर घर तिरंगा 2024" अभियान, जो 9 से 15 अगस्त 2024 तक आयोजित किया गया था. भारत की स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ पर आधारित एक महत्वपूर्ण पहल थी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य हर भारतीय घर में तिरंगा फहराने के लिए नागरिकों को प्रेरित करना था, ताकि राष्ट्रीय एकता और गर्व की भावना को प्रोत्साहित किया जा सके।

•• अभियान का उद्देश्य और महत्व..

इस अभियान का लक्ष्य था कि स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगे को हर घर में फहराकर स्वतंत्रता संग्राम के योगदानकर्ताओं के प्रति सम्मान प्रकट किया जाए। इसके माध्यम से नागरिकों को अपनी जिम्मेदारी और राष्ट्रीय गर्व को व्यक्त करने का अवसर मिला। जब हर घर में तिरंगा लहराया, तो यह भारत की विविधता और एकता का प्रतीक बना।

•• अभियान की विशेषताएँ..

अधिकृत वेबसाइट https://harghartiranga.com पर अभियान से संबंधित सभी जानकारी उपलब्ध थी। इसमें ध्वज की उचित प्रदर्शनी और देखभाल के निर्देश शामिल थे। नागरिक तिरंगा प्राप्त करने के लिए विभिन्न ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग कर सकते थे। स्कूलों और संगठनों को भी इस पहल में शामिल करने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

•• समाजिक प्रभाव..

"हर घर तिरंगा 2024" का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस अभियान ने स्वतंत्रता की भावना और राष्ट्रीय प्रतीक के प्रति गर्व को पुनर्जीवित किया। नागरिकों ने देश के प्रतीकों और उनके महत्व के बारे में जागरुकता बढ़ाई, जिससे राष्ट्रीय एकता को सशक्त किया गया।

•• चुनौतियाँ और समाधान..

इस अभियान के दौरान ध्वज के व्यापारिकरण और सही तरीके से प्रदर्शनी की चुनौतियाँ भी सामने ई। हालांकि, आधिकारिक वेबसाइट पर इन समस्याओं के समाधान के लिए विस्तृत जानकारी उपलब्ध थी, जिससे नागरिक तिरंगा का सही तरीके से उपयोग कर सके और इसके सम्मान को बनाए रख सके।

•• निष्कर्ष..

"हर घर तिरंगा 2024" अभियान एक महत्वपूर्ण पहल थी जिसने स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ को मनाने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने का काम किया। इस अभियान के माध्यम से, सरकार और नागरिकों ने मिलकर तिरंगे के प्रति अपने गर्व और सम्मान को प्रकट किया। यह पहल देश की विविधता और एकता को एक नई ऊँचाई पर ले जाने का एक प्रयास था।

निवेदित माथुर
वरिष्ठ प्रबंधक, सामग्री प्रबंधन
फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

हमारा देश

हम भारत के वासी हैं, तिरंगा अपनी शान है।
कहता हर वृतांत है, हमारा देश यह महान है।
हिमालय की गोद है, देखो समंदर पहरेदार है।
गंगा की मौज है, मनमोहन फूलों का श्रृंगार है।
देश यह महान है, देश यह महान है...

प्रेम है, युद्ध है, धर्म है, संघर्ष है, जीत है।
गीता है, कुरान है, बुद्ध, महावीर का ज्ञान है।
साथ साथ चलते हैं, विकास गढ़ते जाते हैं।
चाँद अब पास है, आगे सूर्य अभियान है।
देश यह महान है, देश यह महान है...

सीमा पर प्रहरी है, सिंह सी प्रबल दहाड़ है।
शांति है, समृद्धि है, अमित स्वाभिमान है।
गाती हर जुबान है, हमारा देश यह महान है।
तिरंगा अपनी शान है, तिरंगा अपनी शान है।
देश यह महान है देश यह महान है..

अमित कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक, खदान

भारत सरकार
भारतीय डाक विभाग

डाक जीवन बीमा

केन्द्र/राज्य सरकार, सार्वजनिक उपकमों सहकारी समितियों मान्यता प्राप्त
शिक्षा संस्थानों एवं बैंकों के कर्मचारियों एवं समस्त डिग्री डिप्लोमा धारकों के लिए

आपकी सुरक्षा एवं समृध्दि हमारा गौरव

POSTAL LIFE INSURANCE

SURING THE FUTURE OF GOVT-EMPLOYEES/ S/NATIONALISED BANKS/ARMED FORCES

Around 5 million policies in Postal Life Insurance and more then 13 million in Rural Postal Life Insurance

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कार्यालय
मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल छत्तीसगढ़ परिमंडल, रायपुर 492001
फोन : 0771-2236388, 2534161, फैक्स : 0771-2236388

संभागीय कार्यालय
रायपुर 0771-2880438, बिलासपुर 07752-250166
रायगढ़ - 07762-232557, दुर्ग - 0788-2261545,
जगदलपुर- 07782-222490

Website : www-indiapost.gov.in toll free : 1800-233-1614

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

Play The
Masterstroke

बड़ौदा होम लोन @8.40%* प्रतिवर्ष के साथ

- बड़ौदा मैक्स सेविंग्स होम लोन के साथ अधिकतम बचत
- महिला उधारकर्ताओं के लिए ब्याज दर में 0.05% की छूट
- जेन ज़ेड एवं मिलेनियल्स (40 वर्ष से कम आयु) के लिए ब्याज दर में 0.10% की छूट
- आसान टॉप-अप सुविधा उपलब्ध
- दैनिक घटती शेष राशि पर ब्याज की गणना

#bobHomeLoan

आवेदन हेतु स्कैन करें

होम लोन हेतु 846 700 1111 पर मिस कॉल करें*

www.bankofbaroda.in

इन्हें फॉलो करें

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

Play The
Masterstroke @9.00%* प्रतिवर्ष
बड़ौदा कार लोन के साथ

- नियत और अनियत ब्याज दरें
- सभी मॉडलों पर 90% ऑन रोड फाइनेंस
- दैनिक घटती शेष राशि पर ब्याज की गणना
- फ्लेक्सिबल पुनर्भुगतान विकल्प
- शून्य पूर्व भुगतान प्रभार
- होम लोन ग्राहकों व इलेक्ट्रिक वाहनों पर 25 बीपीएस की छूट

आवेदन हेतु स्कैन करें

#bobCarLoan

कार लोन हेतु 846 700 1133 पर मिस कॉल करें*

www.bankofbaroda.in

Follow us on

फेरो स्क्रैप निगम लिमिटेड
प्रमुख गतिविधियाँ
हमारे ग्राहक
MIDHANI
0788-2222474
0788-2220423
fsnl.co@gov.in
www.fsnl.nic.in
45 वर्षों से, आगे बढ़ता हुआ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
A Miniratna / CPSE
हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड
आवासन एवं शहरी मंत्रालय के तहत एन.बी.सी.सी.(इंडिया) लिमिटेड की एक सहायक कम्पनी
(भारत सरकार का उद्यम)
निर्माण भवन, भिलाई, (छ.ग.) 490001
हमारी विशेषज्ञता : इस्पात संयंत्रों का निर्माण एवं रखरखाव, औद्योगिक संयंत्रों, भव्य इमारतों, अस्पतालों, विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण, पूर्वोत्तर इलाकों का निर्माण, राजमार्गों एवं पुलों का निर्माण, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनांतर्गत सड़कों का निर्माण, खेल परिसरों का निर्माण, कन्वेंशन सेंटरों का निर्माण, देश की हर तरह की अधोसंरचना का निर्माण।
एच.एस.सी.एल द्वारा मैन रूफ के मिक्सर का रिप्लेसमेंट, भिलाई इस्पात संयंत्र, एस.एम.एस.-II का एक दृश्य
वेब साइट : www.hsclindia.in,
निगमित कार्यालय- तीसरी मंजिल, एनबीसीसी स्क्वायर, प्लाट नं. 111एफ/2, एक्शन एरिया-IIF,
न्यू टाउन,राजारहाट,कोलकाता 700 135
पंजीकृत कार्यालय-पी-34/ए, गरियाहाट रोड (दक्षिण) कोलकाता (प.बंगाल) 700 031

बी ई एम एल

beml

NEW FRONTIERS. NEW DREAMS

प्रमुख क्षेत्रों की परियोजनाओं में रणनीतिक भागीदार

रक्षा और वांतरिक्ष

खनन एवं निर्माण

रेल और मेट्रो

बीईएमएल लिमिटेड

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन शेड्यूल ए कंपनी

रक्षा और वांतरिक्ष । खनन एवं निर्माण । रेल और मेट्रो

www.bemlindia.in

सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट, भिलाई

सेल SAIL

हमारे उत्पाद

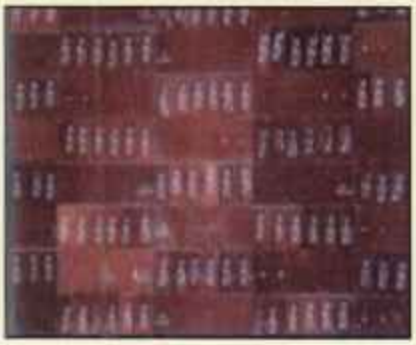

Magnesite Bricks

Mag - Chrome Bricks

Magnesia Carbon Tape Hole Sleeve

DRY Ramming Mass

Silica Bricks

Magnesia Carbon Bricks

L.D. Gunning Mass

SBI
The banker to every Indian

भारतीय स्टेट बैंक
STATE BANK OF INDIA

* सैलरी पैकेज वेरियेंट के अंतर्गत सुविधायें उपलब्ध

* एसबीआई कॉर्पोरेट सैलरी पैकेज सिर्फ बीएसपी व सेल कर्मचारियों के लिए

लॉकर किराया प्रभार में 10% से 50% तक छूट

बचत खाते में जीरो बैलेंस खाता एवं अधिकतम 4 प्रति सदस्य के लिए रू. 5 लाख तक का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवरेज की सुविधा

ग्रुप हॉस्पि केश बेनिफीट – रूपये 1000/– प्रति दिन 7 दिन तक और अधिकतम 30 दिन तक प्रति वर्ष

स्वास्थ्य बीमा पर सुपर टॉप–अप रियायती दरों में

रूपये एटीएम कार्ड से अतिरिक्त 10 लाख तक व्यक्तिगत दुर्घटना व वायु दुर्घटना 1 करोड़ तक

yono SBI

SBI

विस्तृत जानकारी हेतु कृपया अपने
भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से संपर्क करें...

भिलाई

हिंदी हमारी पहचान, देश का अभिमान

-एनएसपीसीएल

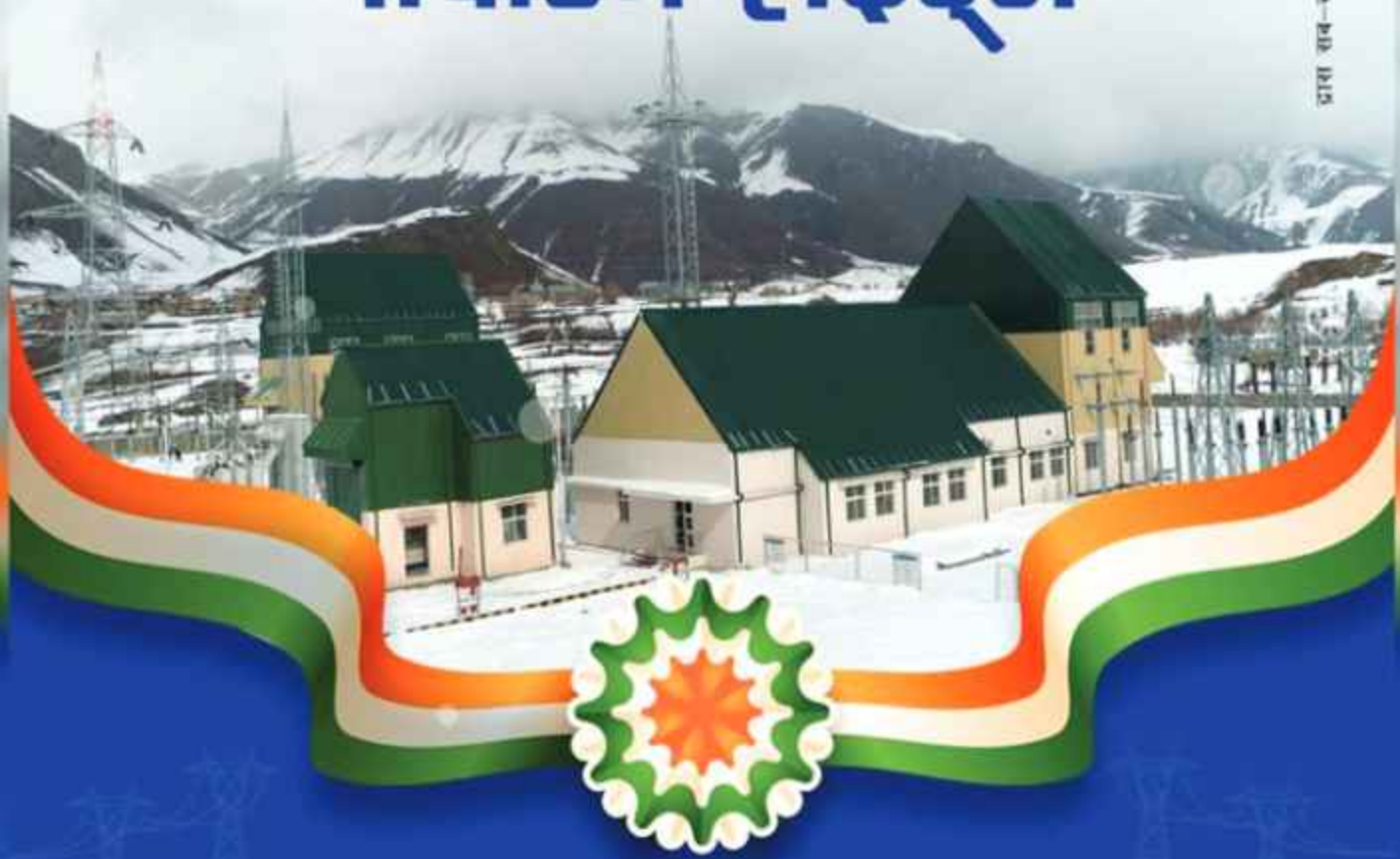

पावरग्रिड
POWERGRID
G20
आज़ादी का अमृत महोत्सव
पावरिंग हाइट्स
द्रास सब–स्टेशन, लद्दाख
एक राष्ट्र । एक ग्रिड । एक आवृत्ति.
विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र की महारत्न उपक्रम (पीएसयू) पावरग्रिड दुनिया की सबसे बड़ी ट्रांसमिशन उपयोगिताओं में से एक है, जो संपूर्ण देश में पावर ट्रांसमिशन परियोजनाओं की कार्य–योजना, डिजाइन, वित्तपोषण, निर्माण, संचालन और रखरखाव में संलग्न है और साथ ही 23 से अधिक देशों में इसके पदचिह्न मौजूद हैं। यह भारतीय दूरसंचार की बुनियादी अवसंरचना क्षेत्र में भी परिचालन करता है।
पारेषण लाइन >1,76,531 सर्किट कि. मी.
276 उप–केन्द्र
अंतरण क्षमता 5,17,861 मेगावॉट
पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
मुख्य व्यवसायिक कार्यालय : सौदामिनी, प्लॉट नंबर 2, सेक्टर 29, गुड़गांव (हरियाणा)–122001, भारत
पंजीकृत कार्यालय : बी–9, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, कटवारिया सराय, नई दिल्ली–110016
सीआईएन: 1989GOI038121
www.powergrid.in
Great Place To Work. Certified